

हिन्दी, उर्दू, पंजाबी में एक साथ प्रकाशित दिल्ली सरकार की पत्रिका

अंक: नवम्बर-जनवरी 2018

दिल्ली

रिहती

दली



भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और

राष्ट्र की एकता और अखंडता

सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

दिल्ली

अंक : नवम्बर—जनवरी 2018

प्रधान सम्पादक

डॉ. जयदेव षडंगी

सम्पादक मंडल

संदीप मिश्र

डॉ. पंकज श्रीवास्तव

नलिन चौहान

कंचन आज़ाद

छाया चित्र

सुधीर कुमार, अजय कुमार, योगेश जोशी

“दिल्ली” पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं तथा दिल्ली सरकार का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

पत्राचार का पता

प्रधान सम्पादक

दिल्ली सूचना एवं प्रसार निदेशालय

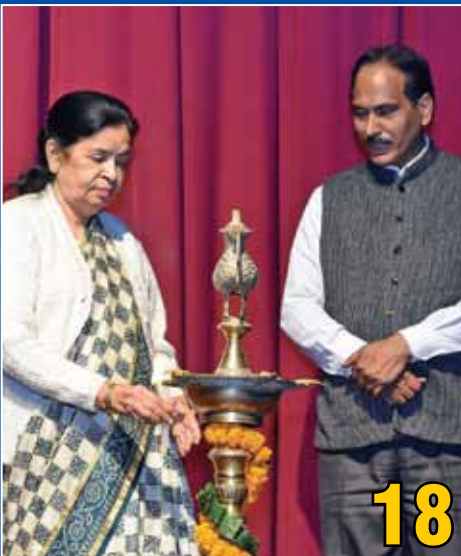
दिल्ली सरकार

खंड सं. 9, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

दूरभाष : 23819046, 23817926

फैक्स : 23814081

ई-मेल : delhidip@gmail.com



18

हिंदी अकादमी का लोक साहित्य उत्सव



मनीष सिंसोदिया को 'फाइनेस्ट मिनिस्टर' का सम्मान

इस अंक में...

हिन्दी

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का गणतंत्र दिवस समारोह पर संबोधन.....	2
दिल्ली सरकार जनता के द्वार 40 सेवाएँ मिलेंगी घर बैठे.....	7
स्कूली बच्चों की सेहत पर नज़र रखेंगे डॉक्टर अंकल.....	6
नेहरू जैसा त्याग और बलिदान किसी ने नहीं किया—सरदार पटेल.....	11
दिल्ली और फुकुओका सरकार के बीच फ्रेंडशीप एग्रीमेंट.....	13
दिल्ली के आकाश में नई 'दस्तक'.....	14
सड़क—दुर्घटना में घायलों का मुफ्त इलाज कराएगी सरकार.....	16
मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का आदेश ठंड में न तोड़ी जाएँ झुगियाँ.....	17
देश का पहला रंगीन वृत्तचित्र था, द दरबार एट दिल्ली, 1912.....	20
दिल्ली विधानसभा में बनाई गई 'शहीद गैलरी'.....	23
दिल्ली के स्कूलों में अनोखा गणतंत्र दिवस.....	25
कविता—सखी बसंत आया.....	28

पंजाबी

ਡਾਕਟਰ ਜਾਂ ਇੰਜੀਨੀਅਰ ਬਣਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਚੰਗਾ ਇਨਸਾਨ ਬਣਨਾ ਬੱਚਿਓ !.....	1
ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਜਨਤਾ ਦੇ ਦਵਾਰ 40 ਸੇਵਾਵਾਂ ਮਿਲਣਗੀਆਂ ਘਰ ਬੈਠੇ.....	6
ਸਕੂਲੀ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਸਿਹਤ ਤੇ ਨਜ਼ਰ ਰਖਣਗੇ ਡਾਕਟਰ ਅੰਕਲ.....	8
ਮਨੀਸ਼ ਸਿੰਸੋਦਿਆ ਨੂੰ 'ਫਾਈਨੇਸਟ ਮਿਨਿਸਟਰ' ਦਾ ਸਨਮਾਨ.....	9
ਨਹਿਰੂ ਜਿਹਾ ਤਿਆਗ ਅਤੇ ਬਲਿਦਾਨ ਕਿਸੇ ਨੇ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ - ਸਰਦਾਰ ਪਟੇਲ.....	10
ਸੜਕ-ਦੁਰਘਟਨਾਂ ਵਿਚ ਜਖਮੀਆ ਦਾ ਫ੍ਰੀ ਇਲਾਜ ਕਰਾਏਗੀ ਸਰਕਾਰ.....	12
ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਅਨੋਖਾ ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ.....	13

उर्दू

1..... وزیر اعلیٰ اور مندر کچر یوال کا جشن یوم جمہوریہ پر خطاب.....	
6..... اسکولی بچوں کی صحت پر دہلی سرکار جنتا کے دوار.....	
8..... نظر رکھیں گے ڈاکٹر انکل.....	
9..... منیش سسودیا کو 'وزیر مالیات' کا اعزاز.....	
10..... بچوں نے لی آئین کے تمہید کا حلف دہلی کے اسکولوں میں انوکھا یوم جمہوریہ.....	
12..... سڑک حادثہ میں زخمیوں کا مفت علاج کروائے سرکار.....	
13..... نہرو جیسا ایثار اور قربانی کسی نے نہیں کیا - سردار پٹیل.....	



मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का गणतंत्र दिवस समारोह पर संबोधन डॉक्टर या इंजीनियर बनने से पहले अच्छा इंसान बनना बच्चों!

भारत के गणतंत्र दिवस पर सबको बहुत-बहुत बधाई। जैसा कि हम जानते हैं कि आज ही के दिन 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ था। गणतंत्र का मतलब है जनता का शासन। जनता के हिसाब से सरकार चलेगी। जनता वोट देती है, अपनी सरकार चलाती है। गरीब से गरीब व्यक्ति को वोट देने का अधिकार है।

देश का हर नागरिक टैक्स देता है। गरीब से गरीब आदमी भी, यहाँ तक कि भिखारी भी टैक्स देता है।

बाजार से माचिस और कपड़ा खरीदने पर टैक्स देता है। गरीब के टैक्स के पैसे से सरकारें चलती हैं। जितना भी सरकार का पैसा खर्च होता है, सारा गरीबों का होता है। ये जितने अफसर, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री हैं, सबका घोड़ा-गाड़ी, बंगला जनता के पैसे से है। सारे मंत्री, विधायक और सांसद जनता के सेवक हैं।

आज मैं अपने साथ संविधान की प्रस्तावना लेकर आया हूँ। ये क्या कहती है, बच्चों को बताना जरूरी है। यह कहती है कि —



“हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ई0 (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी, सम्वत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।”

मुझे बहुत खुशी है कि आज दिल्ली के सारे सरकारी और निजी स्कूलों में 40 लाख बच्चे इस प्रस्तावना की शपथ ले रहे हैं। यही नहीं एक घंटे इस खूबसूरत प्रस्तावना पर चर्चा करेंगे। मैं मनीष सिसोदिया जी को तहे दिल से बधाई दे रहा हूँ कि उन्होंने यह खूबसूरत बात सोची।

हम लोगों ने देखा है कि दिल्ली में पिछले तीन सालों में शिक्षा में कैसी क्रांति आ रही है। शिक्षा का कायाकल्प हो रहा है। लोग बच्चों को निजी से निकालकर सरकारी स्कूलों में भर्ती करा रहे हैं। उनके नतीजे निजी स्कूलों से बेहतर हो रहे हैं।





आजाद भारत में ऐसा कभी देखने को नहीं मिला। मैं गणतंत्र दिवस पर मनीष सिसोदिया जी से एक और अपील करना चाहता हूँ। शिक्षा के तीन लक्ष्य हैं—बच्चा इंसान बन सके, अच्छा नागरिक बन सके और रोजी रोटी कमाने के लायक बन सके। लेकिन मुझे खेद है कि हमारी पूरी शिक्षा प्रणाली लॉर्ड मैकाले की बनाई शिक्षा प्रणाली पर निर्भर है। तमाम देशों ने अपनी शिक्षा प्रणाली बदली है, हमें भी सोचना होगा कि क्या हमारी शिक्षा बच्चों को अच्छा नागरिक, इंसान और रोजी रोटी कमाने लायक बनाती है?... नहीं बनाती। बच्चों को केवल घोंटने की

आदत डाली जाती है। बच्चे मशीन बन जाते हैं। इस प्रणाली को बदलने की जरूरत है।

हमें लगता है कि बच्चों को जो पढ़ाई कराई जा रही है, उसे पचास फीसदी कम करना चाहिए। किताबें आधी से कम करनी है। हमें बच्चों को ऐसा बनाना है कि जब वे पास होकर निकलें तो उनके अंदर देशभक्ति का जज्बा कूटकूट कर भरा रहना चाहिए। अच्छा नागरिक होना चाहिए। समाज के लिए समर्पित होना चाहिए और इतना काबिल होना चाहिए कि वो रोजगार कर सके।



किसी बच्चे से पूछो तो कहते हैं कि डॉक्टर, वकील और इंजीनियर बनना है। अच्छा है, लेकिन सबसे पहले अच्छा इंसान बनना चाहिए। आज पूरे देश में जिस तरह से महिलाओं के खिलाफ अपराध हो रहे हैं...अखबार भरे पड़े हैं बलात्कार की खबरों से...महिला को रेप करके जला दिया गया, मार दिया गया। ऐसी घटनाएँ बहुत तकलीफ देती हैं। इसके लिए सबको मिलकर काम करना पड़ेगा। इसके लिए अपने लड़कों को ट्रेनिंग देना पड़ेगा। घर के अंदर जो भी आदमी गलत काम करते हैं, वो किसी परिवार के होते हैं, किसी माँ के बेटे, बहन के भाई, औरत के पति होते हैं। अपने अपने घर के आदमी को बताओ कि औरतों की इज्जत करना सीखो वरना जो तुम बाहर करते हो, वही कल तुम्हारे घर की महिलाओं के साथ होगा।

पिछले कुछ समय में दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने दिल्ली पुलिस के साथ महिलाओं को छुड़ाया। मैं उन्हें सलाम करता हूँ। बधाई देता हूँ। दिल्ली महिला आयोग और दिल्ली पुलिस ने मिलकर शानदार काम किया, वह इसलिए कि किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया। न दिल्ली सरकार ने, न केंद्र ने, न पार्टी ने। इससे यह पता चलता है कि अफसर बहुत अच्छे हैं, इंस्टीट्यूशन भी अच्छे हैं। राजनीतिक हस्तक्षेप इंस्टीट्यूशन्स को बर्बाद कर देता है। आज मैं दिल्ली के लोगों से दिल्ली के पानी के प्रबंधन के बारे में भी बात करना चाहता हूँ।

दिल्ली में पानी को लेकर कई जगह संकट है। हमारी सरकार बनने के पहले दिल्ली की तमाम कालोनियाँ ऐसी थीं, जहाँ पानी नहीं आता था। टैंकर माफिया था, पानी खरीदना पड़ता था। हमने तीन साल में टैंकर माफिया खत्म कर दिया। तीन सौ कालोनियों में पाइप लाइन पहुँचाया है। अभी बहुत काम बाकी है। दिल्ली में आबादी बढ़ रही है। पानी सीमित है, आने वाले दशकों में यह उम्मीद नहीं कर सकते कि हरियाणा या उत्तर प्रदेश से पानी मंगाते रहें। हमें दिल्ली में एक-एक बूंद पानी को बचाना पड़ेगा। हमने योजना बनाई है। दिल्ली में जगह-जगह छोटे-छोटे सीवर प्लांट लगाने जा रहे हैं जहाँ पानी साफ करके आसपास की वाटर बॉडीज में डाला जाएगा। वाटर लेवल बढ़ेगा। सेल्फ सस्टेनिंग योजना तैयार की जा रही है। कुछ पायलट प्रोजेक्ट हुए हैं जो बहुत सफल हुए हैं। जल्दी ही मैं पूरा खाका पेश करूंगा।

आज दिल्ली में व्यापारियों पर बहुत बड़ा संकट है। व्यापारी यहां चोरी-डाका नहीं डालते। 24 घंटे मेहनत करते हैं, सरकार को टैक्स देते हैं। मैंने सोशल मीडिया पर तस्वीरें और वीडियो देखे कि व्यापारी सड़क पर लेटकर पुलिस के पैर पकड़ कर गिड़गिड़ा रहे हैं। हम व्यापारियों को ऐसे नहीं छोड़ सकते। अगर दिल्ली में व्यापार ठप हो गया तो लोगों को रोजगार कौन देगा। उनकी सीलिंग बंद होनी चाहिए। गलत कानून की वजह



से व्यापारियों को परेशानी हो रही है। कानून को ठीक किया जाए ताकि व्यापारियों का उत्पीड़न बंद हो। मैं केंद्र से हाथ जोड़कर अपील करता हूँ। अगर मास्टर प्लान में बदलाव करना है या अध्यादेश लाना हो, जो करना हो करें। जो सहयोग चाहिए वह राज्य सरकार देगी।

दोस्तों, कल गुड़गांव में बच्चों के ऊपर एक बस में कुछ लोगों ने पत्थर बरसाए। सोशल मीडिया में वीडियो देखे कि टीचर बच्चों को कैसे सीट के नीचे घुसा रहे थे। मैं पूरी रात सो नहीं पाया। गणतंत्र दिवस के पहले देश की राजधानी से कुछ किलोमीटर दूर अगर बच्चों को इस तरह पत्थरों से मारा जाता है तो यह डूब मरने की बात है। किसी को कोई भी समस्या हो, हमारे बच्चों पर हाथ नहीं उठा सकते।

हमारा भारत देश भगवान राम की धरती है, भगवान कृष्ण की धरती है, ये गौतम बुद्ध की धरती है, भगवान महावीर की धरती है, गुरुनानक जी महाराज की धरती है, यह कबीर और मीरा की धरती है, यह मोहम्मद साहब और जीसस क्राइस्ट के अनुयायियों की धरती है, ये गाँधी की धरती है.. मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या भगवान राम ने कभी कहा था कि मासूम बच्चों पर पत्थर चलाने चाहिए? क्या भगवान कृष्ण ने, गौतम बुद्ध ने, महावीर ने ऐसी शिक्षा दी थी? क्या गुरु नानक ने, मोहम्मद साहब ने, कबीर ने, मीरा ने, गांधी जी ने कभी कहा था कि मासूम बच्चों पर पत्थर

चलाने चाहिए? कभी नहीं कहा। भारत संत-महात्माओं का देश है। जिन लोगों ने कल बच्चों पर पत्थर बरसाए वे किस धर्म के लोग थे? मैं पूरी रात सो नहीं पाया। मैं राम का भक्त हूँ, अगर भगवान राम होते तो ऐसे लोगों को सजा देते। मुझे लगता है कि जो सजा रावण को दी थी, उससे भी कड़ी सजा देते जिन्होंने बच्चों पर पत्थर बरसाए।

आज देश को चंद लोग तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, जाति और धर्म के नाम पर। ये ठीक नहीं है। आज गणतंत्र दिवस के अवसर पर यह बात मैं बहुत पीड़ा से उठा रहा हूँ। मैं भारतमाता से प्यार करता हूँ। अपने भारत के लिए तन-मन-धन सब कुछ देने को तैयार हूँ।

इस मंच के माध्यम से मैं अपील करता हूँ कि हम भारत के लोग सुख शांति चाहते हैं, हम भारत के लोग प्यार और मोहब्बत चाहते हैं। हम भारत के लोग हिंसा नहीं चाहते। हम भारत के लोग शांति से अपने परिवार को पालना चाहते हैं। हम अपने बच्चों से प्यार करते हैं। हम भारत के लोग अपने देश से प्यार करते हैं। हम भारत के लोग अपने देश को टूटते नहीं देख सकते।

भारत माता की जय

इंकलाब जिंदाबाद.. ■





दिल्ली सरकार जनता के द्वार 40 सेवाएँ मिलेंगी घर बैठे

दिल्ली की जनता को सुविधाएँ देने के लिए राज्य सरकार लगातार नई-नई कोशिशें करती रहती है। इसी के तहत अब तमाम जरूरी सेवाओं के लिए उसे दफ्तरों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। कर्मचारी उनके घर जाकर ही तमाम औपचारिकताएँ पूरी करेंगे।

ओबीसी प्रमाणपत्र, शादी प्रमाण पत्र समेत जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र जैसी जरूरी सेवाएं अब दिल्ली वालों को घर बैठे उपलब्ध होगी। 8 विभागों की 40 सेवाओं के लिए सरकार ने निजी क्षेत्र का सहयोग लेने का फैसला लिया है। इन सेवाओं के लिए जनता को सिर्फ एक कॉल सेंटर पर अपने संबंधित काम की सूचना देनी होगी और आसानी से सरकारी सेवाएं घर बैठे ही जनता को उपलब्ध हो जाएंगी। करीब 25 लाख लोगों को लाभ होने की संभावना जताई जा रही है।

उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के मुताबिक ऐसी सुविधा उपलब्ध कराने वाला दिल्ली पहला राज्य होगा। अभी इन सेवाओं के लिए जनता को सरकारी कार्यालयों पर बार-बार चक्कर लगाने होते थे और कई सेवाओं का लाभ लेने में महीनों का समय लग जाता था। इस सुविधा का आसान बनाने के लिए सरकार ने यह फैसला लिया है। इस स्कीम की मदद से आम आदमी को उसके घर पर ही इन सेवाओं को उपलब्ध कराया जाएगा। उसे फॉर्म लेने या जमा कराने के लिए सरकारी कार्यालय आने की जरूरत नहीं होगी। केवल उन प्रमाणपत्रों के लिए शारीरिक जांच की जरूरत होगी, जिनमें कानून उपस्थिति को अनिवार्य किया गया है।

जल्द ही इन विभागों की 40 सेवाओं के लिए सरकार एक निजी कंपनी से अनुबंध करेगी। इसके तहत निजी कंपनियां निर्धारित कार्य के लिए एक शुल्क तय करेंगी और इस

शुल्क भुगतान के बाद यह सेवा आम आदमी को उपलब्ध कराई जा सकेगी।

होम डिलीवरी सेवाओं का प्रयोग करने के लिए निजी कंपनियां एक कॉल सेंटर तैयार करेंगी। इस कॉल सेंटर उपभोक्ता को अपने काम संबंधित जानकारी और घर पर मिलने का समय बताना होगा। इसके बाद संबंधित कर्मचारी उपभोक्ता के घर जाएगा। वहीं पर संबंधित कार्य के कागजात स्कैन करेगा और प्रमाणपत्र उपलब्ध कराएगा। सुबह 7 से रात 10 बजे तक यह सुविधा उपलब्ध होगी।

इन 8 विभागों की 40 सेवाएं आएंगी दायरे में

● राजस्व विभाग	40
● परिवहन विभाग	11
● समाज कल्याण	03
● खाद्य आपूर्ति	02
● जल बोर्ड	04
● श्रम विभाग	02
● महिला बाल कल्याण विभाग	02
● कानून विभाग	01

दिल्ली सरकार के एक अध्ययन के मुताबिक एक साल में औसतन इन 40 सेवाओं का प्रयोग 25 लाख लोग करते हैं। इसमें सबसे अधिक ओबीसी प्रमाणपत्र प्रयोग होता है। इस साल में अब तक 1.67 लाख ने ये प्रमाण पत्र बनवाए हैं।

ये हैं प्रमुख सेवाएं

- मैरिज प्रमाण पत्र
- विधवा पेंशन
- गरीब महिलाओं की बेटी की शादी का प्रमाण
- निर्माण गतिविधियों में लगे कर्मचारियों का अनुबंध नवीनीकरण
- पानी के कनेक्शन, सीवर कनेक्शन, कनेक्शन रीओपन, कनेक्शन काटना
- गरीब परिवारों का बीमा कार्ड
- ओल्ड ऐज पेंशन, विकलांग पेंशन, दिल्ली फैमली बेंनिफिट स्कीम
- वाहन आरसी, आरसी में बदलाव, मालिकाना हक बदलाव आदि
- ओबीसी, एसी, एसटी प्रमाण पत्र, डोमिसाइल, आय प्रमाणपत्र, जन्म मृत्यु प्रमाण आदेश, जमीन रिकार्ड, शादी पंजीकरण



Delhi Transport Corporation





स्कूली बच्चों की सेहत पर नज़र रखेंगे डॉक्टर अंकल

दिल्ली सरकार ने स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में नया रंग जोड़ते हुए बच्चों की सेहत की निरंतर निगरानी का फैसला किया है। इसके लिए सभी सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए डॉक्टर की व्यवस्था की जाएगी। इस तरह हर बच्चे की हेल्थ स्क्रीनिंग होती रहेगी। इसके लिए 350 सरकारी स्कूलों में मोहल्ला क्लीनिक की तर्ज पर स्कूल क्लीनिक खुलेंगे।

बच्चों की सेहत को लेकर बरती गई लापरवाही जीवन भर तकलीफ दे सकती है। लेकिन अक्सर जागरूकता के अभाव या गरीबी की वजह से सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माँ-बाप इस ओर ध्यान नहीं दे पाते हैं। ऐसे में दिल्ली की सरकार ने यह संवेदनशील कदम

उठाया है। योजना के मुताबिक हर स्कूल क्लीनिक में एक डॉक्टर और एक असिस्टेंट होगा ताकि बच्चों का नियमित रूप से हेल्थ चेकअप हो सके। दिल्ली में करीब 1100 सरकारी स्कूल हैं। एक स्कूल क्लीनिक से तीन स्कूलों को जोड़कर सभी स्कूली बच्चों के लिए हेल्थ चेकअप की व्यवस्था की जाएगी।

स्कूल क्लीनिक में बच्चों को होने वाली बीमारियों पर ही ध्यान नहीं दिया जाएगा, खून की कमी, कम सुनने और दाँतों की समस्या जैसी परेशानियों पर भी नजर रखी जाएगी। दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था में आ रहे सकारात्मक बदलावों के क्रम में इसे एक अभिनव प्रयोग माना जा रहा है। ■

मनीष सिसोदिया को 'फाइनेस्ट मिनिस्टर' का सम्मान

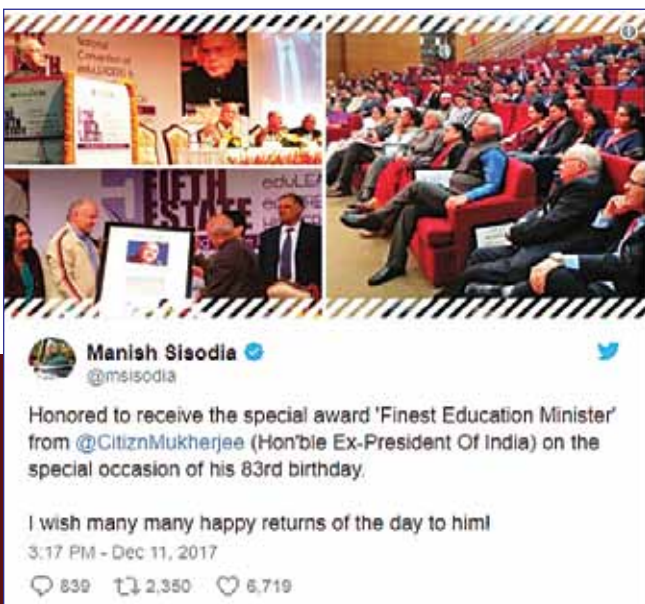
दिल्ली के उपमुख्यमंत्री और शिक्षामंत्री मनीष सिसोदिया को पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने फाइनेस्ट एजुकेशन मिनिस्टर (देश के सबसे बेहतरीन शिक्षामंत्री) का सम्मान दिया। एक शैक्षिक थिंक टैंक 'द फिफथ एस्टेट' की ओर से शिक्षा पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने श्री सिसोदिया को यह सम्मान दिया।

शिक्षामंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि वह प्रणब मुखर्जी से मिले पुरस्कार से वे काफी सम्मानित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने इस मौके को बेहद ख़ास बताया कि यह पुरस्कार पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के जन्मदिन पर उनके ही हाथों प्राप्त हुआ।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने मनीष सिसोदिया को को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह पुरस्कार सबसे उपयुक्त व्यक्ति से मिला है। श्री सिसोदिया को मिला यह सम्मान बताता है कि दिल्ली की सार्वजनिक शिक्षा क्षेत्र में आ रहे सकारात्मक परिवर्तनों को लोग कितनी



आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं। शिक्षामंत्री बनते ही उन्होंने जिस तरह सरकारी स्कूलों की दशा बेहतर करने की दिशा में रात-दिन एक कर दिया। शिक्षक-छात्र अनुपात को दुरुस्त करने से लेकर कमरों की उपलब्धता पर जोर दिया। साथ ही शिक्षकों और प्रधानाचार्यों को देश-विदेश में प्रशिक्षण दिलवाया गया। स्कूलों की छोटी से लेकर बड़ी समस्याओं को हल करने पर जोर दिया गया। नतीजा ये हुआ कि सरकारी स्कूलों का रिजल्ट बहुत बेहतर हुआ। दिल्ली के लोगों का विश्वास बढ़ा और तमाम लोग प्राइवेट स्कूल से अपने बच्चों को निकाल दिल्ली के सरकारी स्कूलों में दाखिल कराने लगे। श्री सिसोदिया के ईमानदार प्रयास का ही नतीजा है कि उन्हें देश का सबसे बेहतरीन शिक्षा मंत्री आँका गया है जो दिल्ली के पूरे शिक्षा विभाग के लिए गर्व की बात है।



प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस 14 नवंबर पर विशेष

नेहरू जैसा त्याग और बलिदान किसी ने नहीं किया-सरदार पटेल

1961 में प्रधानमंत्री नेहरू ने 'सरदार सरोवर बाँध' की नींव रखी। यह सरदार पटेल के प्रति उनकी विनम्र श्रद्धांजलि थी जिन्होंने आजादी और बाँटवारे के जटिल दिनों में उनका बखूबी साथ दिया था। नेहरू, पटेल के अनन्य प्रशंसक थे, हालाँकि वैचारिक आधार पर दोनों में मतभेद थे और यह कोई छुपी बात नहीं थी। यह वह दौर था जब मतभेद का अर्थ मनभेद नहीं होता था और एक ही पार्टी में रहते हुए नेता, विभिन्न विषयों पर लिखित असहमतियाँ जताते हुए बहस चलाते थे। सारी दुनिया जान जाती थी कि अमुक विषय पर अमुक नेता के क्या विचार हैं।

हाल के दिनों में पटेल को नेहरू के खिलाफ बताने का एक अभियान चल रहा है। कुछ इस अंदाज में जैसे

कि 500 से ज्यादा रियासतों के भारत संघ में विलय के 'कारनामे' में प्रधानमंत्री नेहरू की कोई भूमिका ही नहीं थी, सब कुछ अकेले 'गृहमंत्री' पटेल ने कर डाला था। और कश्मीर की समस्या सिर्फ और सिर्फ 'प्रधानमंत्री' नेहरू की देन थी, गृहमंत्री पटेल का उससे कोई लेना-देना नहीं था। नेहरू के प्रधानमंत्री बनने को भी पटेल के खिलाफ षड़यंत्र की तरह पेश किया जाता है। सोशल मीडिया में तो इस सिलसिले में सच्चे-झूठे किस्सों से भरा, पूरा पाठ्यक्रम मौजूद है।

क्यों न इस मुद्दे पर क्यों ना सीधे पटेल की ही राय जान ली जाए। सोशल मीडिया की अफवाहों से बाहर जाकर नेहरू और पटेल के पत्र पढ़े जाएँ।



भारत की आजादी का दिन करीब आ रहा था। मंत्रिमंडल के स्वरूप पर चर्चा हो रही थी। 1 अगस्त 1947 को नेहरू ने पटेल को लिखा—

“कुछ हद तक औपचारिकताएं निभाना

जरूरी होने से

मैं आपको

मंत्रिमंडल

में सम्मिलित

होने का

निमंत्रण देने

के लिए लिख

रहा हूँ। इस

पत्र का कोई

महत्व नहीं है,

क्योंकि आप

तो मंत्रिमंडल के

सुदृढ़ स्तंभ हैं।”

पटेल ने 3 अगस्त

को नेहरू के पत्र के

जवाब में लिखा—

“आपके 1 अगस्त के

पत्र के लिए अनेक

धन्यवाद। एक-दूसरे

के प्रति हमारा जो

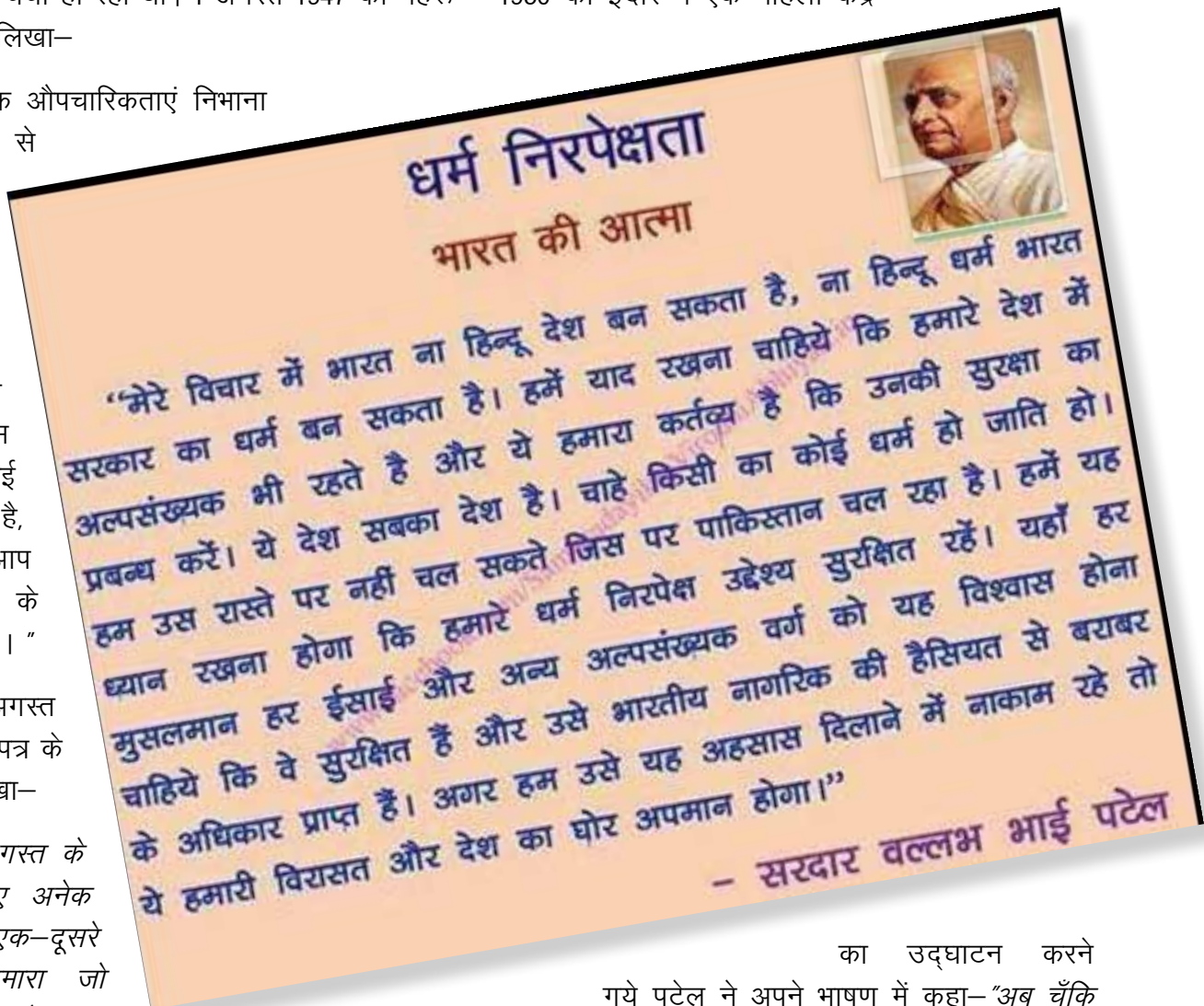
अनुराग और प्रेम रहा

है तथा लगभग 30 वर्ष

की हमारी जो अखंड मित्रता है, उसे देखते हुए औपचारिकता के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। आशा है कि मेरी सेवाएं बाकी के जीवन के लिए आपके अधीन रहेंगी। आपको उस ध्येय की सिद्धि के लिए मेरी शुद्ध और संपूर्ण वफादारी और निष्ठा प्राप्त होगी, जिसके लिए आपके जैसा त्याग और बलिदान भारत के अन्य किसी पुरुष ने नहीं किया है। हमारा सम्मिलन और संयोजन अटूट और अखंड है और उसी में हमारी शक्ति निहित है। आपने अपने पत्र में मेरे लिए जो भावनाएं व्यक्त की हैं, उसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ।”

पटेल की ये भावनाएं सिर्फ औपचारिकता नहीं थी। अपनी मृत्यु के करीब डेढ़ महीने पहले उन्होंने नेहरू को लेकर

जो कहा वो किसी वसीयत की तरह है। 2 अक्टूबर 1950 को इंदौर में एक महिला केंद्र



का उद्घाटन करने

गये पटेल ने अपने भाषण में कहा—“अब चूँकि महात्मा हमारे बीच नहीं हैं, नेहरू ही हमारे नेता हैं। बापू ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था और इसकी घोषणा भी की थी। अब यह बापू के सिपाहियों का कर्तव्य है कि वे उनके निर्देश का पालन करें और मैं एक गैरवफादार सिपाही नहीं हूँ।”

(‘सरदार पटेल का पत्र व्यवहार, 1945–50’ प्रकाशक—नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद)

साफ है, पटेल और नेहरू, दोनों एक ही राह के राही थे। दोनों गाँधी जी के शिष्य थे और भारत को आधुनिक, लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष गणराज्य बनाने के उसी सपने से जुड़े थे जिसे गाँधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देशवासियों में जगाया था। ■

दिल्ली और फुकुओका सरकार के बीच फ्रेंडशिप एग्रीमेंट



राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार और जापान के फुकुओका प्रांतीय सरकार (फुकुओका प्रीफेक्चुरल गवर्नमेंट) के बीच 16 जनवरी को दिल्ली में फ्रेंडशिप एग्रीमेंट पर दस्तखत हुए। दिल्ली सरकार की ओर से मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और फुकुओका सरकार की ओर से गवर्नर हिरोशी ओगावा ने दस्तखत किए।

इस समझौते के मुताबिक दोनों शहरों के बीच पर्यावरण, प्रदूषण, संस्कृति, पर्यटन और शिक्षा जैसे विषयों पर आदान-प्रदान कार्यक्रम होंगे। जुड़वा शहरों के रूप में इस सहमतिपत्र को 2020 तक प्रभावी माना जाएगा। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इस सहमति पर खुशी

जताते हुए कहा कि इससे दोनों ही शहरों को भरपूर लाभ होगा। तकनीकी सहयोग से वायु प्रदूषण को कम किया जा सकेगा और युवाओं के एक्सचेंज प्रोग्राम से हम और करीब आएँगे। उन्होंने कहा कि प्रदूषण को लेकर चिंताएँ बढ़ी हैं जिसे हल करने में सहयोग मिलेगा। मेट्रो में जापानी सहयोग का अनुभव आगे भी बढ़ेगा। यह यातायात के दूसरे साधनों में भी बढ़ेगा, ऐसी उम्मीद है।

इस मौके पर दिल्ली विधानसभाध्यक्ष रामनिवास गोयल, उपाध्यक्ष राखी बिड़ला, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, शहरी विकास मंत्री सत्येंद्र जैन, पर्यावरण मंत्री इमरान हुसैन, मुख्य सचिव अंशु प्रकाश, वित्त सचिव एस.के. सहाय सहित कई अन्य महत्वपूर्ण अधिकारी मौजूद थे। ■



दिल्ली के आकाश में नई 'दस्तक'

शिक्षा के साथ संस्कृति पर भी ध्यान देगी सरकार-सिसोदिया

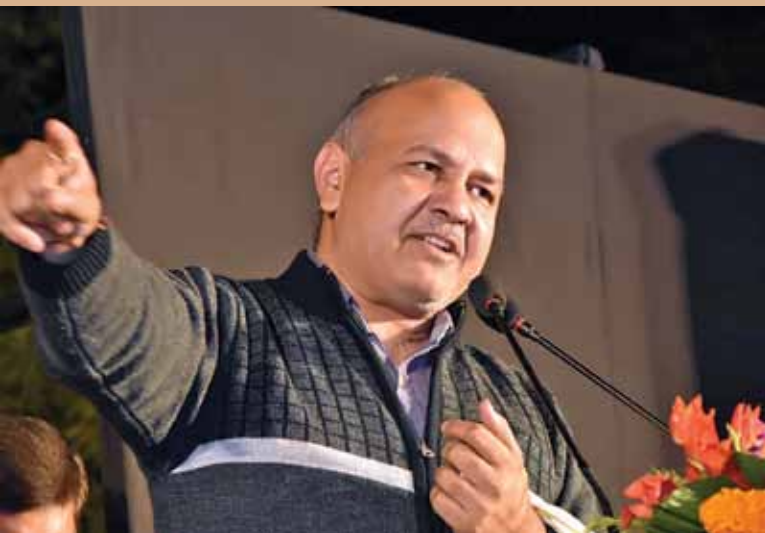
दिल्ली की फ़िजाओं में एक नई दस्तक सुनाई पड़ रही है। यह दस्तक है कला—संस्कृति की। दिल्ली सरकार ने दस्तक नाम देते हुए एक नया कार्यक्रम शुरू किया है ताकि दिल्ली का हर कोना मानवीय भावनाओं से महक उठे।

17 दिसंबर को जनकपुरी में आयोजित दस्तक में मशहूर कव्वाल निजामी बंधुओं ने अपनी शानदार कव्वालियों से जैसे इस संकल्प को नई ऊंचाई दी। माहौल में अमीर खुसरो से लेकर कबीर के शब्द ऐसे बिखरे कि शाम महकने लगी।

इस मौके पर मौजूद दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि अभी तक सरकार का पूरा ध्यान

शिक्षा पर था, लेकिन अब कला और संस्कृति पर भी पूरा ध्यान दिया जाएगा। शिक्षा और संस्कृति समाज के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं और किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। शिक्षा आगे बढ़ने के लिए जरूरी है तो संस्कृति समाज की आत्मा को जिंदा रखती है। उन्होंने कव्वाली की पारंपरिक विधा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह घूमने की नहीं, झूमने की महफिल है।

जनकपुरी के जिस पार्क में निजामी बंधुओं ने यह सुरीली दस्तक दी, वहाँ हजारों लोग मौजूद थे। दस्तक का मकसद भी यही है कि संगीत, नृत्य, नाटक जैसी प्रदर्शनकारी कलाओं को दिल्ली के कोने-कोने तक पहुँचाया जाए, न कि ऐसे आयोजन केवल लुटियन दिल्ली तक सीमित रह जाएँ।



निजामी बंधु दिल्ली के मशहूर क़व्वाल हैं। उन्होंने अपनी गायकी के हुनर से समों बाँध दिया। अमीर खुसरो, कबीर और तमाम दूसरे मशहूर शायरों के कलाम से भरी-पूरी उनकी क़व्वालियाँ भाईचारे का संदेश दे रही थीं जो वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है।

आम लोगों ने दिल्ली सरकार की इस पहले को काफी सराहा। जनकपुरी निवासी निम्मी मल्होत्रा भी दर्शकों में थीं। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम लोगों को जोड़ते हैं।

दूरियाँ घटती हैं और भाईचारा बढ़ता है। सरकार की यह पहल बहुत सराहनीय है।

दिल्ली सरकार का यह दस्तक कार्यक्रम अब निरंतर चलेगा। निजामी बंधुओं से पहले गज़ल गायकी को नया रंग देने वाले अहमद हुसैन-मोहम्मद हुसैन भी इस कार्यक्रम के तहत अपने फन का जौहर दिखा चुके हैं।



सड़क-दुर्घटना में घायलों का मुफ्त इलाज कराएगी सरकार

आगजनी और एसिड अटैक के पीड़ितों को भी मिलेगी सुविधा

दिल्ली सरकार का एक और मानवीय कदम। अब देश की राजधानी की सड़कों पर किसी दुर्घटना में घायल व्यक्ति को इलाज के लिए तड़पना नहीं पड़ेगा। सरकार ने फैसला किया है कि घायलों को किसी भी नजदीकी अस्पताल में मुफ्त इलाज की सुविधा दी जाएगी। यही नहीं घायल को उपचार के लिए अस्पताल पहुँचाने वाले व्यक्ति को दो हजार रुपये का इनाम भी दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में नैदानिक प्रतिष्ठान (पंजीकरण एवं नियमन) अधिनियम को मंजूरी दे दी गई। कैबिनेट के फैसले के तहत घायल को तुरंत किसी भी (निजी व सरकारी) अस्पताल में भर्ती करवाया जा सकता है। उपचार के दौरान आने वाले खर्च को दिल्ली सरकार वहन करेगी।

स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने इसे एक महत्वपूर्ण फैसला करार देते हुए बताया कि दिल्ली में हर साल करीब आठ हजार सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं जिनमें करीब 15 हजार लोग घायल होते हैं। घायलों को तुरंत उपचार न मिलने की वजह से हर साल करीब 1600 लोगों को जान से हाथ धोना पड़ता

है। श्री जैन ने कहा कि अभी दुर्घटना के बाद पुलिस या कोई अन्य, घायल को पहले सरकारी अस्पताल ले जाने का प्रयास करते हैं। जबकि पहला एक घंटा काफी महत्वपूर्ण होता है। ऐसे में कई बार समय पर मरीज अस्पताल नहीं पहुँच पाता और उसकी हालत बिगड़ जाती है और कई बार मौत भी हो जाती है।

इस फैसले के बाद अब मरीज को किसी भी अस्पताल में भर्ती करवाया जा सकता है। यहां इलाज के दौरान आने वाले खर्च का दिल्ली सरकार वहन करेगी। माननीय उपराज्यपाल की मंजूरी के बाद यह योजना लागू हो जाएगी।

इसी के साथ आग व एसिड अटैक में घायल होने वाले को भी दिल्ली सरकार सुविधा उपलब्ध कराएगी। स्वास्थ्यमंत्री सत्येंद्र जैन ने बताया कि आग से होने वाली दुर्घटना में घायल व एसिड अटैक में घायल को भी किसी भी अस्पताल में मुफ्त उपचार की सुविधा दी जाएगी। दिल्ली में हर वर्ष सैकड़ों की संख्या में आगजनी की घटना होती है। इसमें काफी लोग घायल हो जाते हैं। ■





मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का आदेश ठंड में न तोड़ी जाएं झुग्गियाँ

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शहर की भू-स्वामित्व वाली सभी एजेंसियों को आदेश दिया है कि वे सर्दी के मौसम तक झुग्गियों को न तोड़ें।

15 दिसंबर को दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड, दिल्ली विकास प्राधिकरण और तीनों नगर निगमों के अधिकारियों के साथ झुग्गी योजना पर चर्चा के बाद मुख्यमंत्री ने यह आदेश दिया। दिल्ली सरकार के आदेश के मुताबिक, एजेंसियों से कहा गया है कि वे सर्दियों के जाने तक किसी भी झुग्गी में तोड़फोड़ न करें। 28 फरवरी 2018 तक इस दिशा में कोई कदम न उठाया जाए। एजेंसियों से यह भी कहा गया है कि झुग्गियों में तोड़फोड़ करते समय प्रोटोकाल का अक्षरशः पालन किया जाए।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि तोड़फोड़ नीति का पालन किये बिना झुग्गियों को नहीं ढहाया जाना चाहिये। झुग्गी में रहने वालों को दूसरी जगह स्थापित किये बिना और उनके पुनर्वास के बगैर भविष्य में भी कोई तोड़फोड़ नहीं होनी चाहिये। अधिसूचित झुग्गी योजना के अनुसार बोर्ड तोड़फोड़ के मानक तैयार करेगा और यह दिल्ली की सभी एजेंसियों पर लागू होगा।

गौरतलब है कि भीषण ठंड में झुग्गियों को तोड़ने की कार्रवाई से तमाम गरीब सड़क पर आ जाते हैं। औरतों और बच्चों को भी बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। मुख्यमंत्री के इस मानवीय दृष्टिकोण की वजह से झुग्गी निवासी ठंड में बेघर होने की चिंता से मुक्त हो जाएंगे। ■



हिंदी अकादमी का लोक साहित्य उत्सव

जो लोक से नहीं जुड़ा, वह साहित्य नहीं-मैत्रेयी पुष्पा

“जो लोक से नहीं जुड़ा हो, मैं उसे साहित्य नहीं मानती। नौटंकी लोक को जीवंत करने वाली विधा है। रेणू जी को बहुत पढ़ा है और नेटुआ से परिचित हुई हूँ, और जहाँ से आती हूँ, वह बुंदेलखंड है। वहाँ वृंदावनलाल वर्मा और मैथिलीशरण गुप्त भी थे। उन्होंने वहाँ के लोक को अनुभव किया और लिखा। यहाँ जो होगा, मैंने वह देखा हुआ है। हरदौल के क्षेत्र से ही मैं आपके बीच आती हूँ। हरदौल की कहानी आपको अनूठी लगेगी। उसको यहाँ जिस तरह से प्रस्तुत किया जाएगा, ये उनकी कलाकारी पर निर्भर करेगा। यहाँ पर युवाओं का आना ही हमारी

उपलब्धि है। युवा इससे जुड़े यही हमारा उद्देश्य है। हम आगे भी नई-नई योजना बनाएंगे।”

मशहूर लेखिका और दिल्ली हिंदी अकादमी की उपाध्यक्ष मैत्रेयी पुष्पा ने लोक साहित्य उत्सव का उद्घाटन करते हुए हुए जब नौटंकी का इस तरह से परिचय दिया तो, पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। हिंदी अकादमी ने 1 से 3 दिसंबर के बीच एलटीजी सभागार में लोक साहित्य उत्सव का आयोजन करके लोक और राजधानी के बीच एक सांस्कृतिक पुल बाँधा। नौटंकी विधा पर आधारित यह उत्सव युवा निर्देशकों को समर्पित



रहा। तीन दिन के इस उत्सव में मध्यप्रदेश शैली में 'थैंक यू बाब लोचनदास' (निर्देशक अरविंद सिंह) और 'हरदौल' (निर्देशक सौरभ त्रिपाठी) तथा बिहार की लोकपरंपरा पर आधारित 'नेटुआ' (निर्देशक दिलीप कुमार गुप्ता) का मंचन हुआ जिनके जरिए दर्शकों ने नौटंकीयों के असल रंग का आनंद लिया।

श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा ने कहा मध्यप्रदेश के ओरछा में राम राजा के मंदिर में हरदौल की भी तस्वीर है। हरदौल की मान्यता बहुत है। कहते हैं कि वहाँ पर जब भी कोई शादी-विवाह होता है तो 'भाती' सबसे पहले हरदौल से 'भात' की मांग करते हैं। हरदौल की मृत्यु कुंवारा रहते ही हो गई थी। परंतु वहाँ पर आरती के समय सबसे पहले एक सिपाही बंदूक के साथ सैल्यूट करता है, उसके बाद ही आरती प्रारंभ होती है। यह ओरछा की संस्कृति है। यह संस्कृति लोककलाओं में पूरी झलक देती है।

उन्होंने निर्देशकों और नौटंकी कलाकारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस प्रकार की नौटंकी आज के समय में बहुत ही कम देखने को मिलती है जिसमें विशेषतः

लोक-बोली का ही प्रयोग किया गया हो। इस भागदौड़ इंटरनेट युग में ऐसी प्रस्तुतियाँ भरोसा पैदा करती हैं।

अकादमी के सचिव जीतराम भट्ट ने कहा कि हिंदी अकादमी की विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करती है। इसमें से एक लोक-साहित्य उत्सव भी है। हिंदी अकादमी साहित्य, संस्कृति, भाषा, के प्रचार-प्रसार के क्रम में स्कूल, कॉलेज से लेकर साहित्यकारों और कवियों को जोड़ती है। उसी परंपरा में लोकसंस्कृति को भी जन सामान्य से जोड़ने की गतिविधि की गई। लोक साहित्य पर आधारित सांस्कृतिक विरासत जीवन के वास्तविक मूल से जोड़ती है। वहाँ शहरों जैसी चमक-दमक की अपेक्षा सादगी से परिपूर्ण जीवन है, जो कि निश्चल है।

दर्शकों से खचाखच भरे हुए सभागार में मंचित तीनों नौटंकी दर्शकों की अपेक्षाओं पर खरी उतरतीं और उन्हें भरपूर सराहा गया। नौटंकी ने दर्शकों को भाव विह्वल भी किया और हंसाया भी। अकादमी की ओर से सभी निर्देशकों और कलाकारों को सम्मानित किया गया। ■



देश का पहला रंगीन वृत्तचित्र था, द दरबार एट दिल्ली, 1912



—नलिन चौहान

आज कम लोग ही इस बात से परिचित होंगे कि अंग्रेज भारत में वर्ष 1911 में दिल्ली में हुए तीसरे दरबार का विश्व फिल्म के इतिहास में एक अलग स्थान है। उल्लेखनीय है कि तीसरे दिल्ली दरबार का समारोह नए अंग्रेज राजा बने जॉर्ज पंचम को भारत सम्राट के रूप में स्थापित करने के हिसाब से किया गया था। राज्यारोहण दरबार के लिए अंग्रेज शाही जोड़े, किंग जॉर्ज पंचम और क्वीन मैरी, की भारत यात्रा (1911–1912) के दौरान बम्बई, दिल्ली और कलकत्ता में आयोजित समारोहों, जुलूसों और सार्वजनिक समारोहों के सभी भव्य रंगों को पहली बार एक रंगीन फिल्म में समेटा गया।

देश का यह पहला रंगीन वृत्तचित्र 'विद् अवर किंग थ्रू इंडिया' को 'द दरबार एट दिल्ली, 1912' के नाम से भी जाना जाता है। वर्ष 1911 के दिल्ली दरबार में कुल पांच फर्मों को शूटिंग, जिसे अब डाक्यूमेंटरी फुटेज कहा जाता है, करनी की अनुमति दी गई थी। इनमें से रंगीन शूटिंग करने वाली अर्बन की ही टीम थी। इस टीम ने अंग्रेज राजा और रानी के मुंबई में अपोलो बंदर (जहां पर बाद में गेटवे ऑफ इंडिया बना) में उतरने-जाने तक की फुटेज तैयार की। शाही युगल दम्पति ने लाल किला के उत्तर में बने सलीमगढ़ किले के द्वार पर बने प्रस्तर हाथियों के बीच से होते हुए दिल्ली में प्रवेश किया। जबकि हकीकत में दिल्ली दरबार अनेक परेडों और शाही घोषणाओं की

एक श्रृंखला थी, जिसका अंत अंग्रेज सम्राट की दो घोषणाओं के साथ हुआ। इनमें से पहली बंगाल विभाजन की समाप्ति और दूसरी अंग्रेज साम्राज्य की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की थी।

इसे आमतौर पर एक एकल फिल्म के रूप में जाना जाता है पर इसे फिल्मों के एक समूह के रूप में देखना अधिक सटीक होगा। जिनमें दिसंबर 1911 में अंग्रेज शाही दम्पति की पहली भारत यात्रा के साथ मुख्य रूप से दरबार समारोह के विवरण का दस्तावेजीकरण किया गया। इस फिल्म के विभिन्न प्रदर्शनों के लिए फिल्मों के विभिन्न सेटों को जोड़ा गया ताकि अलग-अलग अवधि में बनी फिल्मों के शो को प्रदर्शित करना संभव हो। आज इनमें से केवल दो रील ही बची है, जिसमें से एक मुख्य समारोह के बाद सैनिकों का निरीक्षण और दूसरी शाही दम्पति के भारत दौरे के अंत में कलकत्ता में निकला एक जुलूस है। इस फिल्म ने अपने रंग, अवधि और बहु-मीडिया प्रदर्शन के कारण दुनिया भर में देखने वालों को प्रभावित किया।

अगर दिल्ली दरबार को पूरी तरह फिल्माने के साथ उसकी फोटोग्राफी नहीं की गई होती तो 1911 के इस दरबार की विशालता का आंकलन करना मुश्किल ही नहीं असंभव होता। यहां एकत्र हुए महाराजाओं, चमकदार पीतल के साथ जुटे 34,000 सैनिकों, अंग्रेज वाइसरॉय के दल सहित शाही अमला, जहां अंग्रेज राजा ने 6,100 हीरे से जड़ित भारत का शाही ताज पहना, मौजूद था। ऐसे में अर्बन के लिए फिल्म शूटिंग के हिसाब से इससे अधिक रंगदार घटना नहीं हो सकती थी।



दूसरे शब्दों में, दिल्ली दरबार की घटनाओं को किनेमाकलर रिकॉर्ड करने वाले चार्ल्स अर्बन के लिए यह बड़ी उपलब्धि थी। अर्बन ने शाही दम्पति के पूरे भारत के दौरे को किनेमाकलर प्रक्रिया में फिल्म बनाने के लिए अपने साथ चार-पांच कैमरामैन रखे थे।

ऐसा इसलिए भी था क्योंकि कई दूसरी कंपनियों ने भी श्वेत-श्याम रंगों में समारोहों को फिल्माया था। अर्बन ने दिल्ली दरबार की घटनाओं, अंग्रेज साम्राज्य के उत्कर्ष की घड़ियों और उसके सबसे बड़े दृश्यमान जमावड़े को फिल्मांकन के लिए अपनी किनेमाकलर प्रक्रिया का इस्तेमाल किया।

किनेमाकलर पहली सफल रंगीन चलचित्र प्रक्रिया थी, जिसका 1908-14 की अवधि के बीच व्यावसायिक उपयोग किया गया। इसका आविष्कार सन् 1906 में इंग्लैंड के ब्राइटन के जॉर्ज अल्बर्ट स्मिथ ने किया था। इसे वर्ष 1908 में चार्ल्स अर्बन की लंदन की अर्बन ट्रेडिंग कंपनी ने शुरू किया था। सन् 1909 के बाद से, इस प्रक्रिया को किनेमाकलर के नाम से जाना गया। यह दो रंग की एक रंगीन रंग प्रक्रिया थी, जिसमें फोटोग्राफी और पीछे से लाल-हरे रंग के फिल्टरों से श्वेत-श्याम फिल्म का चित्रण किया जाता था।

जॉर्ज पंचम ने इस फिल्म को 11 मई 1912 को स्कला में क्वीन मैरी, क्वीन एलेक्जेंड्रा और रूस की साम्राज्ञी मारिया के साथ देखा। रूस की महारानी ने इस प्रदर्शन के विषय में अपने बेटे निकोलस द्वितीय को लिखा कि कल रात हमने उनकी (अंग्रेज शाही दम्पति) भारत यात्रा देखी। किनेमाकलर की फिल्म बेहद रोचक और सुंदर है और यह सभी घटनाओं को वास्तविकता



में देखने का भाव पैदा करती है। यहां तक कि 12 दिसंबर 1912 को इन फिल्मों को बकिंघम पैलेस में भी दिखाया गया।

इतना ही नहीं, इस फिल्म के पहले शो का प्रदर्शन 2 फरवरी 1912 को लंदन में स्कला थियेटर में 'विद् अवर किंग एंड क्वीन थ्रू इंडिया' शीर्षक के तहत किया गया। यह शो करीब ढाई घंटे तक चला। स्काला के मंच को ताजमहल की प्रतिकृति के रूप में तैयार किया गया था। इसके लिए विशेष रूप से संगीत तैयार किया गया था, जिसमें 48 वाद्य यंत्रों का एक ऑर्केस्ट्रा, गाने वाले 24 व्यक्तियों के एक दल सहित बांसुरी-ड्रम बजाने वाले थे, जो कि फिल्म प्रस्तुति का अभिन्न अंग थे।



इस फिल्म ने कामकाजी तबके के लिए एक सस्ते रोमांचक पिक्चर शो को दुनिया भर के भद्रलोक के लिए एक उपयुक्त मनोरंजन का स्थान दिला दिया। उल्लेखनीय है इसे देखने वाले भद्रलोक में ब्रिटिश शाही परिवार, पोप और जापान के सम्राट तक थे। इसके बावजूद कुछ वर्षों के भीतर ही इस फिल्म का फुटेज गायब हो गया था। वर्ष 2000 में इसकी एक रील, रूस के एक शहर क्रान्सनोगोर्स्क में मिली। प्राकृतिक रंगीन फिल्मों की पहली पीढ़ी में फिल्म उत्पादन के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाली इस भव्य फिल्म के केवल

दस मिनट का फुटेज ही शेष बचा है। ■





दिल्ली विधानसभा में बनाई गई 'शहीद गैलरी'

आज़ादी के उल्लास को जंग-ए-आज़ादी के शहीदों को समर्पित करते हुए दिल्ली विधानसभा में एक शहीद गैलरी स्थापित की गई है। 26 जनवरी को इस शहीद गैलरी का विधिवत उद्घाटन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने विधानसभाध्यक्ष रामनिवास

गोयल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की उपस्थिति में किया।

इस अनोखी शहीद गैलरी में देश के लिए सर्वस्व कुर्बान करने वाले 70 महान क्रांतिकारियों की तस्वीरें लगाई





गई है ताकि लोग समझ सकें कि जिस आज़ादी का वे उपभोग कर रहे हैं, वह आसानी से प्राप्त नहीं हुई। इसके पीछे बलिदान का लंबा सिलसिला है।

शहीद गैलरी में रानी लक्ष्मी बाई, टीपू सुल्तान से लेकर लाला लाजपत राय और कस्तूरबा गाँधी तक की तस्वीरों को शामिल किया गया है ताकि अंग्रेजी राज के दमन से लोहा लेने वाले पूरे इतिहास के समग्र कालखंड को शामिल किया जा सके।

इस मौके पर दिल्ली विधानसभा के स्पीकर राम निवास गोयल ने कहा कि दिल्ली विधानसभा पूरे देश में एकलौती

विधानसभा है, जहां भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु, तीनों की एक जगह मूर्तियां लगाई गई हैं। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भी विधानसभाध्यक्ष को इस पहल के लिए बधाई देते हुए कहा कि लोगों की भावनाओं को शहीदों से जोड़े रखने में ऐसे प्रयास बहुत कारगर हैं।

इस मौके पर दिल्ली विधानसभा को आम लोगों के लिए भी खोला गया ताकि लोग दिल्ली विधानसभा को देख सकें और शहीद गैलरी जाकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। ■





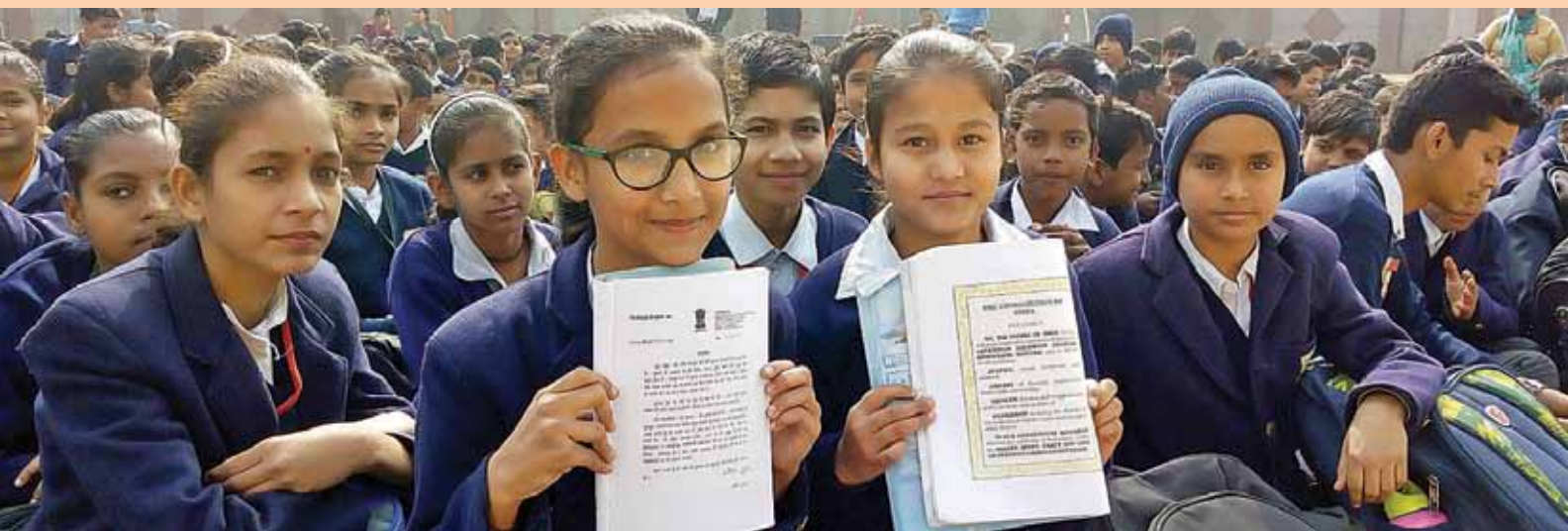
दिल्ली के स्कूलों में अनौखा गणतंत्र दिवस बच्चों ने ली संविधान के प्रस्तावना की शपथ

वर्ष 2018 की 26 जनवरी दिल्ली के स्कूली बच्चों के लिए एक नया अर्थ लेकर आई। पहली बार उन्होंने न सिर्फ संविधान की प्रस्तावना के मुताबिक भारत बनाने का संकल्प लिया बल्कि उसके एक-एक शब्द का पाठ भी किया।

दिल्ली के सभी स्कूलों में, सभी बच्चों और अध्यापकों ने शपथ ली कि संविधान की प्रस्तावना में लिखे भारत के सपने को शिक्षा के जरिए साकार करेंगे। प्रार्थना सभाओं

में शपथ के बाद सभी स्कूलों में हर क्लास के पहले पीरियड में संविधान की प्रस्तावना में लिखे एक-एक शब्द और भारत के सपने पर ही चर्चा हुई। यह अपने आपमें रिकॉर्ड था कि सरकारी और प्राइवेट स्कूलों के करीब 40 लाख बच्चों और अध्यापकों ने पहली बार इतनी बड़ी संख्या में संविधान की प्रस्तावना की शपथ ली।

इसी के साथ शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया का छात्रों के नाम लिखे पत्र को भी स्कूलों में पढ़ा गया, जिसमें उन्होंने





मनीष सिसोदिया
MANISH SISODIA



उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110002

Deputy Chief Minister, GNCTD
Delhi Secretariat, I.P. Estate,
New Delhi-110002

प्यारे बच्चो,

आप सभी को गणतंत्र दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं मैं उम्मीद कर रहा हूँ कि ये पर्व आपके लिए विशेष होने जा रहा है। इस मौके पर हम सब अपने 'गणतंत्र की आत्मा' से रूबरू होने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे गणतंत्र की आत्मा हमारे संविधान की प्रस्तावना में है। अगर हम थोड़ा भी गौर से पढ़ें तो ये महज संविधान की प्रस्तावना में लिखे कुछ शब्द नहीं बल्कि एक सपना है कि हम भारतीय लोग कैसे जीना चाहते हैं। धरती के किसी भी कोने में, किसी भी देश में मानव जाति के एक साथ रहने के लिए इससे सुंदर सपना नहीं देखा गया।

हालांकि जब हम अपने आसपास देखते हैं तो महसूस करते हैं कि संविधान की प्रस्तावना में भारत और भारत के लोगों के लिए देखा गया सपना पूरा होना अभी बाकी है। कहीं-कहीं तो हम इससे भटके भी हैं। हमें ये स्वीकारने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि हम अभी संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनने की मंजिल से अभी दूर हैं क्योंकि अभी तक हम अपने समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय की व्यवस्था देने में व्यावहारिक रूप से सफल नहीं हुए हैं। हम अपने समस्त नागरिकों को विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता देने के सपने को व्यवहार में सच नहीं कर सके हैं। हम अपने समस्त नागरिकों की प्रतिष्ठा और अवसर की समानता को व्यवहार में लाने में सफल नहीं हुए हैं।

मेरा मानना है कि यह सपना शिक्षा के जरिये ही सच हो सकता है। अभी तक हमने शिक्षा में मूलतय व्यक्ति के रोजगार, आजीविका आदि पहलुओं पर ज्यादा जोर देकर काम किया है। अब समय आ गया है कि हम शिक्षा के जरिये संविधान की प्रस्तावना में लिखे सपने को सच करने के लिए पूरी ताकत से काम करें। इसकी शुरुआत हम इस गणतंत्र दिवस से कर रहे हैं।

आपने ध्यान दिया होगा कि आपकी सभी पाठ्यपुस्तकों में संविधान की इस प्रस्तावना को विषय वस्तु से पहले शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य एकदम स्पष्ट है कि हम किसी भी क्लास में जो भी विषय पढ़ रहे हैं या पढ़ा रहे हैं, वो इस सपने को सच करने की दिशा में है। हमें गणित और विज्ञान भी इस सपने को ध्यान में रखकर पढ़ना-पढ़ाना है। इतिहास-भूगोल भी और हिंदी-अंग्रेजी भी इसी सपने को लक्ष्य रखकर पढ़ना-पढ़ाना है। लेकिन अब तक ऐसा नहीं हो पाया है। हमने इसे किताबों में पहले पन्ने पर शामिल तो कर लिया परंतु कभी क्लास में इस पर चर्चा नहीं होती कि हम गणित, विज्ञान, भाषा साहित्य, इतिहास इत्यादि पढ़ने-पढ़ाने से पहले इस पर चर्चा या चिंतन करें कि इनकी पुस्तकों में शामिल पाठ्यक्रम का पहले पन्ने पर लिखे संविधान की प्रस्तावना से क्या संबंध है। लेकिन अब हम सब इस दिशा में काम करेंगे। आप सबको भी न सिर्फ इसमें अपने शिक्षकों का सहयोग करना है बल्कि आगे बढ़कर इस पर लगातार चर्चा करनी है। मैं उम्मीद करता हूँ कि शिक्षा के जरिये संविधान की प्रस्तावना में लिखे सपने को सच करने में हम जरूर कामयाब होंगे।

एक बार फिर से आप सभी को गणतंत्र दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

मनीष सिसोदिया

संविधान निर्माताओं के सपनों को साकार करने के लिए शिक्षा का इस्तेमाल करने का अनुरोध था। श्री सिसोदिया ने खुद सिविल लाइंस के राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय पहुंचकर झंडा रोहण किया। उन्होंने बच्चों से कहा कि भारत के संविधान की प्रस्तावना में जो सपना रखा गया है, वह सिर्फ शिक्षा की मदद से पूरा हो सकता है। शिक्षा का मकसद है जनता को जागरूक करना, ताकि वे सही

दिशा में समाज को ले जा सकें। सिसोदिया ने कहा कि प्रस्तावना एनसीईआरटी की किताब के पहले ही पेज में मौजूद है। हर सब्जेक्ट के टीचर को इसे शिक्षा से जोड़ते हुए पढ़ाना चाहिए। प्राइवेट, सरकारी, एमसीडी... दिल्ली के सारे स्कूलों से हमने संविधान की प्रस्तावना को पढ़ाने को कहा है।





सखि, वसन्त आया ।
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया ।

किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका,
मधुप-वृन्द बन्दी-
पिक-स्वर नभ सरसाया ।

लता-मुकुल-हार-गन्ध-भार भर
बही पवन बन्द मन्द मन्दतर,
जागी नयनों में वन-
यौवन की माया ।

आवृत सरसी-उर-सरसिज उठे,
केशर के केश कली के छुटे,
स्वर्ण-शस्य-अञ्चल
पृथ्वी का लहराया ।

सूर्यकांत त्रिपाठी “निराला”





ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਦਾ ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ ਸਮਾਰੋਹ ਤੇ ਸੰਬੋਧਨ ਡਾਕਟਰ ਜਾਂ ਇੰਜੀਨੀਅਰ ਬਣਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਚੰਗਾ ਇਨਸਾਨ ਬਣਨਾ ਬੱਚਿਓ !

ਭਾਰਤ ਦੇ ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ ਤੇ ਸਭ ਨੂੰ ਬਹੁਤ-ਬਹੁਤ ਵਧਾਈ। ਜਿਹਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਜਾਣਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਅੱਜ ਹੀ ਦੇ ਦਿਨ 26 ਜਨਵਰੀ 1950 ਨੂੰ ਭਾਰਤ ਦਾ ਸੰਵਿਧਾਨ ਲਾਗੂ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਗਣਤੰਤਰ ਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਜਨਤਾ ਦਾ ਸ਼ਾਸਨ। ਜਨਤਾ ਦੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰ ਚਲੇ ਗੀ। ਜਨਤਾ ਵੋਟ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਆਪਣੀ ਸਰਕਾਰ ਚਲਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਗਰੀਬ ਤੋਂ ਗਰੀਬ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਵੋਟ ਦੇਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੈ।

ਦੇਸ਼ ਦਾ ਹਰ ਨਾਗਰਿਕ ਟੈਕਸ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਗਰੀਬ ਤੋਂ ਗਰੀਬ ਆਦਮੀ ਵੀ, ਇਥੋਂ ਤਕ ਕਿ ਭਿਖਾਰੀ ਵੀ ਟੈਕਸ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

ਬਜ਼ਾਰ ਤੋਂ ਮਾਚਿਸ ਅਤੇ ਕਪੜਾ ਖਰੀਦਣ ਤੇ ਟੈਕਸ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਗਰੀਬ ਦੇ ਟੈਕਸ ਦੇ ਪੈਸੇ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰਾਂ ਚਲਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਿੰਨਾ ਵੀ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਪੈਸਾ ਖਰਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਸਾਰਾ ਗਰੀਬਾਂ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਜਿੰਨੇ ਅਫਸਰ, ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ, ਉਪ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ, ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਹਨ, ਸਭ ਦਾ ਘੋੜਾ-ਗੱਡੀ ਜਨਤਾ ਦੇ ਪੈਸੇ ਨਾਲ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਮੰਤਰੀ, ਵਿਧਾਇਕ ਅਤੇ ਸਾਂਸਦ ਜਨਤਾ ਦੇ ਸੇਵਕ ਹਨ।

ਅੱਜ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਲੈ ਕੇ ਆਇਆ ਹਾਂ। ਇਹ ਕੀ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ, ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਦੱਸਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਇਹ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ ਕਿ -



“ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕ, ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਇਕ ਸੰਪੂਰਨ ਪ੍ਰਭੂਤਵ ਸੰਪਨ, ਸਮਾਜਵਾਦੀ, ਧਰਮ ਨਿਰਪੱਖ, ਲੋਕਤਾਂਤਰਿਕ ਗਣਰਾਜ ਬਣਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਸਾਰੇ ਨਾਗਰਿਕਾਂ ਨੂੰ ਸਮਾਜਿਕ, ਆਰਥਿਕ ਅਤੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਨਿਆਂ, ਵਿਚਾਰ ਅਭਿਵਿਅਕਤੀ, ਵਿਸ਼ਵਾਸ, ਧਰਮ ਅਤੇ ਉਪਾਸਨਾ ਨੂੰ ਸੁਤੰਤਰਤਾ, ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਠਾ ਅਤੇ ਮੌਕੇ ਦੀ ਸਮਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰਿਆਂ ਵਿਚ ਵਿਅਕਤੀ ਗਰਿਮਾ ਅਤੇ ਰਾਸ਼ਟਰ ਦੀ ਏਕਤਾ ਅਤੇ ਅਖੰਡਤਾ ਯਕੀਨੀ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਬੰਧੂਤਾ ਵਧਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਦ੍ਰਿੜ ਸੰਕਲਪ ਹੋ ਕੇ ਆਪਣੀ ਇਸ ਸੰਵਿਧਾਨ ਸਭਾ ਵਿਚ ਅੱਜ ਮਿਤੀ 26 ਨਵੰਬਰ 1949 ਈ0 (ਮਿਤੀ ਮਾਰਗ ਉਤਮ ਸ਼ੁਕਲ ਸਪਤਮੀ, ਸੰਮਤ ਦੇ ਹਜ਼ਾਰ ਛੇ ਵਿਕਰਮੀ) ਨੂੰ

ਇਸ ਦੁਆਰਾ ਸੰਵਿਧਾਨ ਨੂੰ ਅੰਗੀਕ੍ਰਿਤ, ਅਧਿਨਿਯਮਿਤ ਅਤੇ ਆਤਮਸਮਰਪਿਤ ਕਰਦੇ ਹਾਂ।”

ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ੀ ਹੈ ਕਿ ਅੱਜ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਾਰੇ ਸਰਕਾਰੀ ਅਤੇ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ 40 ਲਖ ਬੱਚੇ ਇਸ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਦੀ ਸਹੁੰ ਲੈ ਰਹੇ ਹਨ। ਸਿਰਫ ਇਹ ਹੀ ਨਹੀਂ ਇਕ ਘੰਟਾ ਇਸ ਖੂਬਸੂਰਤ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਤੇ ਚਰਚਾ ਕਰਨਗੇ। ਮੈਂ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੌਦਿਆ ਨੂੰ ਪੂਰੇ ਦਿਲ ਨਾਲ ਵਧਾਈ ਦੇ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਹ ਖੂਬਸੂਰਤ ਗੱਲ ਸੋਚੀ।

ਅਸੀਂ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਦੇਖਿਆ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਪਿਛਲੇ ਤਿੰਨ ਸਾਲਾਂ ਵਿਚ ਸਿਖਿਆ ਵਿਚ ਕਿਹੋ ਜਿਹੀ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਆ ਰਹੀ ਹੈ।





ਸਿਖਿਆ ਦਾ ਕਾਇਆਕਲਪ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਲੋਕ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ ਕੱਢ ਕੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਭਰਤੀ ਕਰਵਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ ਚੰਗੇ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ।

ਅਜ਼ਾਦ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਐਸਾ ਕਦੇ ਦੇਖਣ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਮਿਲਿਆ। ਮੈਂ ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ ਤੇ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਜੀ ਨੂੰ ਇਕ ਅਪੀਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ। ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਤਿੰਨ ਟੀਚੇ ਹਨ—ਬੱਚਾ ਇਨਸਾਨ ਬਣ ਸਕੇ, ਚੰਗਾ ਨਾਗਰਿਕ ਬਣ ਸਕੇ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ ਰੋਟੀ ਕਮਾਉਣ ਦੇ ਲਾਇਕ ਬਣ ਸਕੇ। ਲੇਕਿਨ ਮੈਨੂੰ ਅਫ਼ਸੋਸ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੀ ਪੂਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਲਾਰਡ ਮੈਕਾਲੇ

ਦੀ ਬਣਾਈ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਹੈ। ਕਈ ਦੇਸ਼ਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਬਦਲੀ ਹੈ, ਸਾਨੂੰ ਵੀ ਸੋਚਣਾ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਕੀ ਸਾਡੀ ਸਿੱਖਿਆ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਚੰਗਾ ਨਾਗਰਿਕ, ਇਨਸਾਨ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ ਰੋਟੀ ਕਮਾਉਣ ਲਾਇਕ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ ?... ਨਹੀਂ ਬਣਾਉਂਦੀ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਕੇਵਲ ਰੱਟੇ ਦੀ ਆਦਤ ਪਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਬੱਚੇ ਮਸ਼ੀਨ ਬਣ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨੂੰ ਬਦਲਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ।

ਸਾਨੂੰ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਜੋ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ, ਉਸ ਨੂੰ ਪੰਜਾਹ ਫੀਸਦੀ ਘੱਟ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਅੱਧੀਆਂ ਤੋਂ ਘੱਟ ਕਰਨੀਆਂ ਹਨ। ਸਾਨੂੰ ਬੱਚਿਆਂ



ਨੂੰ ਐਸਾ ਬਨਾਉਣਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦ ਉਹ ਪਾਸ ਹੋ ਕੇ ਨਿਕਲਣ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦੇਸ਼ ਭਗਤੀ ਦਾ ਜਜ਼ਬਾ ਕੁਟਕੁਟ ਕੇ ਭਰਿਆ ਹੋਵੇ। ਚੰਗਾ ਨਾਗਰਿਕ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਸਮਾਜ ਦੇ ਲਈ ਸਮਰਪਿਤ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਾਬਿਲ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਕਰ ਸਕੇ।

ਕਿਸੇ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਪੁਛੋਂ ਤਾਂ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਡਾਕਟਰ, ਵਕੀਲ ਅਤੇ ਇੰਜੀਨੀਅਰ ਬਣਨਾ ਹੈ। ਚੰਗਾ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਚੰਗਾ ਇਨਸਾਨ ਬਣਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਪੂਰੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਅਪਰਾਧ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ... ਅਖਬਾਰ ਭਰੇ ਪਏ ਹਨ ਬਲਾਤਕਾਰ ਦੀਆਂ ਖਬਰਾਂ ਨਾਲ... ਮਹਿਲਾ ਨੂੰ ਰੇਪ ਕਰਕੇ ਸਾੜ ਦਿਤਾ ਗਿਆ, ਮਾਰ ਦਿਤਾ ਗਿਆ। ਐਸੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਬਹੁਤ ਤਕਲੀਫ਼ ਦਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਸਭ ਨੂੰ ਮਿਲ ਕੇ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਪਏ ਗਾ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਆਪਣੇ ਲੜਕਿਆਂ ਨੂੰ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਦੇਣੀ ਪਏਗੀ। ਘਰ ਦੇ ਅੰਦਰ ਜੋ ਵੀ ਆਦਮੀ ਗਲਤ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਉਹ ਕਿਸੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਕਿਸੇ ਮਾਂ ਦੇ ਬੇਟੇ, ਭੈਣ ਦੇ ਭਰਾ, ਮਹਿਲਾ ਦੇ ਪਤੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਘਰ ਦੇ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਦੱਸੋ ਕਿ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਦੀ ਇਜ਼ਤ ਕਰਨਾ ਸਿਖੋ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਜੋ ਤੁਸੀਂ ਬਾਹਰ ਕਰਦੇ ਹੋ ਉਹੀ ਤੁਹਾਡੇ ਘਰ ਦੀਆਂ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੋਵੇਗਾ।

ਪਿਛਲੇ ਕੁਝ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਮਹਿਲਾ ਆਯੋਗ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਵਾਤਿ ਮਾਲੀਵਾਲ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਪੁਲੀਸ ਦੇ ਨਾਲ ਮਿਲ ਕੇ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਨੂੰ ਛੁਡਾਇਆ। ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਲਾਮ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਵਧਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਮਹਿਲਾ ਆਯੋਗ ਅਤੇ ਦਿੱਲੀ ਪੁਲੀਸ ਨੇ ਮਿਲ ਕੇ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਕੰਮ ਕੀਤਾ, ਉਹ ਇਸ ਲਈ ਕਿ ਕਿਸੇ ਨੇ ਦਖਲਅੰਦਾਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਨਾ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ, ਨਾ ਕੇਂਦਰ ਨੇ, ਨਾ ਪਾਰਟੀ ਨੇ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਹ ਪਤਾ

ਚਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਅਫਸਰ ਬਹੁਤ ਚੰਗੇ ਹਨ, ਇੰਸਟੀਚਿਊਸ਼ਨ ਵੀ ਚੰਗੇ ਹਨ। ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਦਖਲਅੰਦਾਜ਼ੀ ਇੰਸਟੀਚਿਊਸ਼ਨ ਨੂੰ ਬਰਬਾਦ ਕਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਮੈਂ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਪਾਣੀ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਗੱਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ।

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਕਈ ਜਗ੍ਹਾ ਦਿਕਤ ਹੈ। ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਬਣਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਦਿੱਲੀ ਦੀਆਂ ਕਈ ਕਲੋਨੀਆਂ ਐਸੀਆਂ ਸਨ, ਜਿਥੇ ਪਾਣੀ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ ਸੀ। ਟੈਂਕਰ ਮਾਫੀਆ ਸੀ, ਪਾਣੀ ਖਰੀਦਣਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ। ਅਸੀਂ ਤਿੰਨ ਸਾਲ ਵਿਚ ਟੈਂਕਰ ਮਾਫੀਆ ਖਤਮ ਕਰ ਦਿਤਾ। ਤਿੰਨ ਸੌ ਕਲੋਨੀਆਂ ਵਿਚ ਪਾਈਪ ਲਾਈਨ ਪਹੁੰਚਾਈ ਹੈ। ਅਜੇ ਬਹੁਤ ਕੰਮ ਬਾਕੀ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਅਬਾਦੀ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ। ਪਾਣੀ ਸੀਮਿਤ ਹੈ, ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਦਹਾਕਿਆਂ ਵਿਚ ਇਹ ਉਮੀਦ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਕਿ ਹਰਿਆਣਾ ਜਾਂ ਉਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਪਾਣੀ ਮੰਗਦੇ ਰਹੀਏ। ਸਾਨੂੰ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਇਕ-ਇਕ ਬੂੰਦ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣਾ ਪਏਗਾ। ਅਸੀਂ ਸਕੀਮ ਬਣਾਈ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਥਾਂ-ਥਾਂ ਨਿਕੇ-ਨਿਕੇ ਸੀਵਰ ਪਲਾਂਟ ਲਗਾਉਣ ਜਾ ਰਹੇ ਹਾਂ ਜਿਕੇ ਪਾਣੀ ਸਾਫ਼ ਕਰਕੇ ਆਸਪਾਸ ਦੇ ਪਾਣੀ ਬਾਡੀਜ਼ ਵਿਚ ਪਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਪਾਣੀ ਲੈਵਲ ਵਧੇਗਾ। ਸੇਲਫ਼ ਸਸਟੇਨਿੰਗ ਯੋਜਨਾ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਕੁਝ ਪਾਯਲਟ ਪ੍ਰੋਜੈਕਟ ਹੋਏ ਹਨ ਜੋ ਬਹੁਤ ਸਫਲ ਹੋਏ ਹਨ। ਜਲਦੀ ਹੀ ਮੈਂ ਪੂਰਾ ਨਕਸ਼ਾ ਪੇਸ਼ ਕਰਾਂਗਾ।

ਅੱਜ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਵਪਾਰੀਆਂ ਤੇ ਬਹੁਤ ਵੱਡੀ ਮੁਸੀਬਤ ਹੈ। ਵਪਾਰੀ ਇਥੇ ਚੋਰੀ-ਡਾਕ ਨਹੀਂ ਪਾਉਂਦੇ। 24 ਘੰਟੇ ਮਿਹਨਤ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਟੈਕਸ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਤੇ ਤਸਵੀਰਾਂ ਅਤੇ ਵੀਡੀਓ ਦੇਖੇ ਕਿ ਵਪਾਰੀ ਸੜਕ ਤੇ ਲੇਟ ਕੇ ਪੁਲੀਸ ਦੇ ਪੈਰ ਫੜ ਕੇ ਗਿੜਗਿੜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਅਸੀਂ ਵਪਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਇਵੇਂ ਨਹੀਂ ਛੱਡ ਸਕਦੇ। ਜੇਕਰ ਦਿੱਲੀ



ਵਿਚ ਵਪਾਰ ਠਪ ਹੋ ਗਿਆ ਤਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਕੋਣ ਦੇਵੇਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੀਲਿੰਗ ਬੰਦ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਗਲਤ ਕਾਨੂੰਨ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਵਪਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ।

ਕਾਨੂੰਨ ਨੂੰ ਠੀਕ ਕੀਤਾ ਜਾਏ ਤਾਂ ਕਿ ਵਪਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਹੋ ਰਹੀ ਦਿਕਤ ਖਤਮ ਹੋਵੇ। ਮੈਂ ਕੇਂਦਰ ਨੂੰ ਹੱਕ ਜੋੜ ਕੇ ਅਪੀਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਜੇਕਰ ਮਾਸਟਰ ਪਲਾਨ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ ਕਰਨਾ ਹੈ ਜਾਂ ਬਿਲ ਲਿਆਉਣਾ ਹੈਵੇ, ਜੋ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇ ਕਰੋ। ਜੋ ਸਹਿਯੋਗ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਉਹ ਰਾਜ ਸਰਕਾਰ ਕਰੇਗੀ।

ਦੋਸਤੋ, ਕਲ ਗੁੜਗਾਂਵਾਂ ਵਿਚ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਉਪਰ ਇਕ ਬਸ ਵਿਚ ਕੁਝ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਪੱਥਰ ਬਰਸਾਏ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਵਿਚ ਵੀਡੀਓ ਦੇਖੇ ਕਿ ਅਧਿਆਪਕ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਸੀਟ ਦੇ ਹੇਠਾਂ ਛੁਪਾ ਰਹੇ ਸਨ। ਮੈਂ ਪੂਰੀ ਰਾਤ ਸੌ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ। ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ ਦੇ ਪਹਿਲਾਂ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਤੋਂ ਕੁਝ ਕਿਲੋਮੀਟਰ ਦੂਰ ਜੇਕਰ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੱਥਰਾਂ ਨਾਲ ਮਾਰਿਆ ਜਾਵਾ ਹੈ ਤਾਂ ਡੁਬ ਮਰਨ ਦੀ ਗਲ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਕੋਈ ਵੀ ਦਿਕਤ ਹੋਵੇ, ਸਾਡੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਉਪਰ ਹੱਥ ਨਹੀਂ ਉਠਾ ਸਕਦੇ।

ਸਾਡਾ ਭਾਰਤ ਦੇਸ਼ ਭਗਵਾਨ ਰਾਮ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ, ਭਗਵਾਨ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ, ਇਹ ਗੌਤਮ ਬੁਧ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ, ਭਗਵਾਨ ਮਹਾਂਵੀਰ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ, ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ, ਇਹ ਕਬੀਰ ਅਤੇ ਮੀਰਾਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ, ਇਹ ਮੁਹੰਮਦ ਸਾਹਿਬ ਅਤੇ ਜੀਸਸ ਕ੍ਰਾਈਸਟ ਦੇ ਚੇਲਿਆਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ, ਇਹ ਗਾਂਧੀ ਦੀ ਧਰਤੀ ਹੈ... ਮੈਂ ਪੁਛਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕੀ ਭਗਵਾਨ ਰਾਮ ਨੇ ਕਦੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਮਾਸੂਮ ਬੱਚਿਆਂ ਤੇ ਪੱਥਰ ਚਲਾਉਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ? ਕੀ ਭਗਵਾਨ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਨੇ, ਗੌਤਮ ਬੁਧ ਨੇ, ਮਹਾਂਵੀਰ ਨੇ ਐਸੀ ਸਿਖਿਆ ਦਿਤੀ ਸੀ? ਕੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਨੇ, ਮੁਹੰਮਦ ਸਾਹਿਬ

ਨੇ, ਕਬੀਰ ਨੇ, ਮੀਰਾਂ ਨੇ, ਗਾਂਧੀ ਨੇ ਕਦੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਮਾਸੂਮ ਬੱਚਿਆਂ ਤੇ ਪੱਥਰ ਚਲਾਉਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ?

ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਕਿਹਾ? ਭਾਰਤ-ਸੰਤ ਮਹਾਤਮਾਵਾਂ ਦਾ ਦੇਸ਼ ਹੈ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਕਲ ਬੱਚਿਆਂ ਤੇ ਪੱਥਰ ਬਰਸਾਏ ਉਹ ਕਿਸ ਧਰਮ ਦੇ ਲੋਕ ਸਨ? ਮੈਂ ਪੂਰੀ ਰਾਤ ਸੌ ਨਹੀਂ ਸਕਿਆ। ਮੈਂ ਭਗਵਾਨ ਰਾਮ ਦਾ ਭਗਤ ਹਾਂ, ਜੇਕਰ ਭਗਵਾਨ ਰਾਮ ਹੁੰਦੇ ਤਾਂ ਐਸੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਜਾ ਦਿੰਦੇ। ਮੈਨੂੰ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਸਜਾ ਰਾਵਨ ਨੂੰ ਦਿੰਦੀ ਸੀ, ਉਸ ਤੋਂ ਵੀ ਸਖਤ ਸਜਾ ਦਿੰਦੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਬੱਚਿਆਂ ਤੇ ਪੱਥਰ ਵਰਾਏ।

ਅੱਜ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਕੁਝ ਲੋਕ ਤੋੜਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ, ਜਾਤੀ ਅਤੇ ਧਰਮ ਦੇ ਨਾਮ ਤੇ। ਇਹ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਅੱਜ ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ ਦੇ ਮੌਕੇ ਤੇ ਇਹ ਗਲ ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਤਕਲੀਫ਼ ਨਾਲ ਚੁਕ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਆਪਣੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲਈ ਤਨ-ਮਨ-ਧਨ ਸਭ ਕੁਝ ਦੇਣ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਹਾਂ।

ਇਸ ਮੰਚ ਦੇ ਜਰੀਏ ਮੈਂ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਹੁਕਮਰਾਨਾਂ ਨੂੰ ਅਪੀਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕ ਸੁਖ ਸ਼ਾਂਤੀ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ, ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕ ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਮੁਹੱਬਤ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ। ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕ ਹਿੰਸਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦੇ। ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕ ਸ਼ਾਂਤੀ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਪਾਲਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ। ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪਿਆਰ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਸਾਨੂੰ ਬਖਤ ਦਿਉ। ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਅਸੀਂ ਭਾਰਤ ਦੇ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਟੁੱਟਦੇ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਦੇ।

ਭਾਰਤ ਮਾਤਾ ਦੀ ਜੈ

ਇਨਕਲਾਬ ਜ਼ਿੰਦਾਬਾਦ... ■





ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਜਨਤਾ ਦੇ ਦਵਾਰ 40 ਸੇਵਾਵਾਂ ਮਿਲਣਗੀਆਂ ਘਰ ਬੈਠੇ

ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਦੇਣ ਦੇ ਲਈ ਰਾਜ ਸਰਕਾਰ ਲਗਾਤਾਰ ਨਵੀਆਂ-ਨਵੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਕਰਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਦੇ ਤਹਿਤ ਹੁਣ ਸਾਰੀਆਂ ਜ਼ਰੂਰੀ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦੇ ਲਈ ਉਸ ਨੂੰ ਦਫਤਰਾਂ ਦੇ ਚੱਕਰ ਨਹੀਂ ਲਗਾਉਣੇ ਪੈਣਗੇ। ਕਰਮਚਾਰੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਹੀ ਸਾਰੀਆਂ ਰਸਮਾਂ ਪੂਰੀਆਂ ਕਰਨਗੇ।

ਓਬੀਸੀ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ, ਵਿਆਹ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ, ਸਮੇਤ ਜਨਮ-ਮੌਤ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਜਿਹੀਆਂ ਜ਼ਰੂਰੀ ਸੇਵਾਵਾਂ ਹੁਣ ਦਿੱਲੀ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਘਰ ਬੈਠੇ ਉਪਲਬਧ ਹੋਣਗੀਆਂ। 8 ਵਿਭਾਗਾਂ ਦੀਆਂ 40 ਸੇਵਾਵਾਂ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਨਿਜੀ ਖੇਤਰ ਦਾ ਸਹਿਯੋਗ ਲੈਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਲਿਆ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦੇ ਲਈ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਸਿਰਫ ਇਕ ਕਾਲ ਸੈਂਟਰ ਤੇ ਆਪਣੇ ਸਬੰਧਤ ਕੰਮ ਦੀ ਸੂਚਨਾ ਦੇਣੀ ਹੋਵੇਗੀ ਅਤੇ ਅਸਾਨੀ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰੀ ਸੇਵਾਵਾਂ ਘਰ ਬੈਠੇ ਹੀ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਉਪਲਬਧ ਹੋ ਜਾਣਗੀਆਂ।

ਕਰੀਬ 25 ਲਖ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਲਾਭ ਹੋਣ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਜਤਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਪ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਐਸੀਆਂ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਮੁਹੱਈਆ ਕਰਾਉਣ ਵਾਲਾ ਦਿੱਲੀ ਪਹਿਲਾ ਰਾਜ ਹੋਵੇਗਾ। ਅਜੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦੇ ਲਈ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰਾਂ ਤੇ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਚੱਕਰ ਲਗਾਉਣੇ ਹੁੰਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਕਈ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦਾ ਲਾਭ ਲੈਣ ਵਿਚ ਮਹੀਨਿਆਂ ਦਾ ਸਮਾਂ ਲਗ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਸੁਵਿਧਾ ਨੂੰ ਅਸਾਨ ਬਣਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਹ ਫੈਸਲਾ ਲਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਸਕੀਮ ਦੀ ਮਦਦ ਨਾਲ ਆਮ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਉਸ ਦੇ ਘਰ ਤੇ ਹੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮੁਹੱਈਆ ਕਰਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਫਾਰਮ ਲੈਣ ਜਮ੍ਹਾਂ ਕਰਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕਾਰੀ ਦਫਤਰ ਆਉਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ। ਕੇਵਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟਾਂ ਦੇ ਲਈ ਸਰੀਰਿਕ ਜਾਂਚ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੋਵੇਗੀ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਕਾਨੂੰਨੀ ਉਪਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਜ਼ਰੂਰੀ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

ਜਲਦ ਹੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਭਾਗਾਂ ਦੀ 40 ਸੇਵਾਵਾਂ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਇਕ ਨਿਜੀ ਕੰਪਨੀ ਨਾਲ ਕਾਂਟਰੈਕਟ ਕਰੇਗੀ। ਇਸ ਦੇ ਤਹਿਤ ਨਿਜੀ ਕੰਪਨੀਆਂ ਤੈਅ ਕੰਮ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਸ਼ੁਲਕ ਤੈਅ ਕਰਨਗੀਆਂ ਤੇ ਇਸ ਸ਼ੁਲਕ ਭੁਗਤਾਨ ਦੇ ਬਾਅਦ ਇਹ ਸੇਵਾ ਆਮ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਉਪਲਬਧ ਕਰਾਈ ਜਾ ਸਕੇਗੀ। ਹੋਮ ਡਿਲਿਵਰੀ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਨਿਜੀ ਕੰਪਨੀਆਂ ਇਕ ਕਾਲ ਸੈਂਟਰ ਤਿਆਰ ਕਰਨਗੀਆਂ। ਇਸ ਕਾਲ ਸੈਂਟਰ ਤੇ ਉਪਭੋਗਤਾ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਸਬੰਧਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਅਤੇ ਘਰ ਤੇ ਮਿਲਣ ਦਾ ਸਮਾਂ ਦਸਣਾ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਸਬੰਧਤ ਕਰਮਚਾਰੀ ਉਪਭੋਗਤਾ ਦੇ ਘਰ ਜਾਏਗਾ। ਉਥੇ ਹੀ ਸਬੰਧਤ ਕੰਮ ਦੇ ਕਾਗਜ਼ਾਤ ਸਕੈਨ ਕਰੇਗਾ ਅਤੇ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਉਪਲਬਧ ਕਰਾਏਗਾ। ਸਵੇਰੇ 7 ਵਜੇ ਤੋਂ ਰਾਤ 10 ਵਜੇ ਤਕ ਇਹ ਸੁਵਿਧਾ ਉਪਲਬਧ ਰਹੇਗੀ।

ਇਨ੍ਹਾਂ 8 ਵਿਭਾਗਾਂ ਦੀਆਂ 40 ਸੇਵਾਵਾਂ ਦਾਇਰੇ ਵਿਚ ਆਉਣਗੀਆਂ

- | | |
|-------------------------|----|
| ● ਰਾਜਸਵ ਵਿਭਾਗ | 40 |
| ● ਪਰਿਵਹਨ ਵਿਭਾਗ | 11 |
| ● ਸਮਾਜ ਵਿਭਾਗ | 03 |
| ● ਖੁਰਾਕ ਸਪਲਾਈ | 02 |
| ● ਜਲ ਬੋਰਡ | 04 |
| ● ਕਿਰਤ ਵਿਭਾਗ | 02 |
| ● ਮਹਿਲਾ ਬਾਲ ਕਲਿਆਣ ਵਿਭਾਗ | 02 |
| ● ਕਾਨੂੰਨ ਵਿਭਾਗ | 01 |

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਇਕ ਅਧਿਐਨ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਇਕ ਸਾਲ ਵਿਚ ਐਸਤਨ ਇਨ੍ਹਾਂ 40 ਸੇਵਾਵਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ 25 ਲਖ ਲੋਕ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਓਬੀਸੀ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਾਲ ਹੁਣ ਤਕ 1.67 ਲਖ ਇਹ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਬਣਵਾਏ ਹਨ।

ਇਹ ਹਨ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸੇਵਾਵਾਂ

- ਵਿਆਹ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ
- ਵਿਧਵਾ ਪੇਂਸ਼ਨ
- ਗਰੀਬ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਦੀ ਬੇਟੀ ਦੇ ਵਿਆਹ ਦਾ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ
- ਨਿਰਮਾਣ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਵਿਚ ਲਗੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਦਾ ਅਨੁਬੰਧ ਨਵੀਨੀਕਰਨ
- ਪਾਣੀ ਦੇ ਕਨੇਕਸ਼ਨ, ਸੀਵਰ ਕਨੇਕਸ਼ਨ, ਕਨੇਕਸ਼ਨ ਰਿਓਪਨ, ਕਨੇਕਸ਼ਨ ਕੱਟਣਾ
- ਗਰੀਬ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਦਾ ਬੀਮਾ ਕਾਰਡ
- ਓਲਡ ਏਜ ਪੇਂਸ਼ਨ, ਵਿਕਲਾਂਗ ਪੇਂਸ਼ਨ, ਦਿੱਲੀ ਫੈਮਲੀ ਬੈਨਿਫਿਟ ਸਕੀਮ
- ਵਾਹਨ ਆਰਸੀ, ਆਰਸੀ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ, ਮਾਲਿਕਾਨਾ ਹਕ ਬਦਲਾਅ ਆਦਿ
- ਓਬੀਸੀ, ਐਸਸੀ, ਐਸਟੀ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ, ਡੋਮਿਸਾਈਲ, ਆਮਦਨ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ, ਜਨਮ ਮੌਤ ਪ੍ਰਮਾਣ ਆਦੇਸ਼, ਜਮੀਨ ਰਿਕਾਰਡ, ਵਿਆਹ ਰਜਿਸਟਰੇਸ਼ਨ



Delhi Transport Corporation





ਸਕੂਲੀ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਸਿਹਤ ਤੇ ਨਜ਼ਰ ਰਖਣਗੇ ਡਾਕਟਰ ਅੰਕਲ

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਸਕੂਲੀ ਸਿਖਿਆ ਦੀ ਗੁਣਵਤਾ ਵਿਚ ਨਵਾਂ ਰੰਗ ਜੋੜਦੇ ਹੋਏ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਸਿਹਤ ਦੀ ਲਗਾਤਾਰ ਨਿਗਰਾਨੀ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਸਾਰੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਡਾਕਟਰਾਂ ਦੀ ਵਿਵਸਥਾ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹਰ ਬੱਚੇ ਦੀ ਹੋਲਥ ਸਕੀਨਿੰਗ ਹੁੰਦੀ ਰਹੇਗੀ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ 350 ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਦੀ ਤਰਜ ਤੇ ਸਕੂਲ ਕਲੀਨਿਕ ਖੁਲਣਗੇ।

ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਸਿਹਤ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਵਰਤੀ ਗਈ ਲਾਪ੍ਰਵਾਹੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਭਰ ਤਕਲੀਫ਼ ਦੇ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਅਕਸਰ ਜਾਗਰੂਕਤਾ ਦੇ ਅਭਾਵ ਜਾਂ ਗਰੀਬੀ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਮਾਂ-ਬਾਪ ਇਸ ਪਾਸੇ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਦੇ ਪਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਐਸੇ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੀ

ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਹ ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲ ਕਦਮ ਉਠਾਇਆ ਹੈ। ਸਕੀਮ ਦੇ ਤਹਿਤ ਹਰ ਸਕੂਲ ਕਲੀਨਿਕ ਵਿਚ ਇਕ ਡਾਕਟਰ ਅਤੇ ਇਕ ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਕਿ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਨਿਯਮਿਤ ਰੂਪ ਨਾਲ ਹੈਲਥ ਚੈਕਅਪ ਹੋ ਸਕੇ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਕਰੀਬ 1100 ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਹਨ। ਇਕ ਸਕੂਲ ਕਲੀਨਿਕ ਨਾਲ ਤਿੰਨ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਜੋੜ ਕੇ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲੀ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਹੈਲਥ ਚੈਕਅਪ ਦੀ ਵਿਵਸਥਾ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।

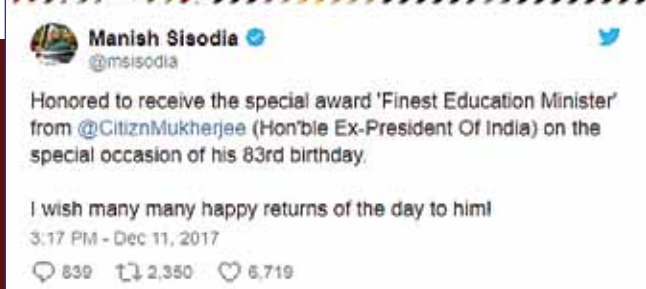
ਸਕੂਲ ਕਲੀਨਿਕ ਵਿਚ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਹੋਣ ਵਾਲੀਆਂ ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਤੇ ਹੀ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ, ਬਲਕਿ ਖੂਨ ਦੀ ਕਮੀ, ਘਟ ਸੁਨਣ ਅਤੇ ਦੰਦਾਂ ਦੀ ਸਮਸਿਆ ਜਿਹੀਆਂ ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨੀਆਂ ਤੇ ਵੀ ਨਜ਼ਰ ਰਖੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸਿਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਆ ਰਹੇ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਬਦਲਾਵਾਂ ਦੇ ਕ੍ਰਮ ਵਿਚ ਇਸ ਨੂੰ ਇਕ ਨਵਾਂ ਪ੍ਰਯੋਗ ਮੰਨਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ■

ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੂੰ 'ਫਾਈਨੇਸਟ ਮਿਨਿਸਟਰ' ਦਾ ਸਨਮਾਨ

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਸਿਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੂੰ ਸਾਬਕਾ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਪ੍ਰਣਵ ਮੁਖਰਜੀ ਨੇ ਫਾਈਨੇਸਟ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਮਿਨਿਸਟਰ (ਦੇਸ਼ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਸਿਖਿਆ ਮੰਤਰੀ) ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਦਿਤਾ। ਇਕ ਸਿਖਿਅਕ ਥਿੰਕ ਟੈਂਕ 'ਦਾ ਫਿਫਥ ਅਸਟੇਟ' ਦੇ ਵਲੋਂ ਸਿਖਿਆ ਤੇ ਆਯੋਜਿਤ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਸੰਮੇਲਨ ਵਿਚ ਸਾਬਕਾ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਪ੍ਰਣਵ ਮੁਖਰਜੀ ਨੇ ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੂੰ ਇਹ ਸਨਮਾਨ ਦਿਤਾ।

ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸੋਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ ਪ੍ਰਣਵ ਮੁਖਰਜੀ ਤੋਂ ਮਿਲੇ ਪੁਰਸਕਾਰ ਤੋਂ ਉਹ ਕਾਫੀ ਸਨਮਾਨਿਤ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਮੌਕੇ ਨੂੰ ਬੇਹਦ ਖਾਸ ਦਸਿਆ ਕਿ ਇਹ ਪੁਰਸਕਾਰ ਸਾਬਕਾ ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ ਪ੍ਰਣਵ ਮੁਖਰਜੀ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਨ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹੱਥੋਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਇਆ।

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਮੁਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਪੁਰਸਕਾਰ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਵਿਅਕਤੀ ਤੋਂ ਮਿਲਿਆ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਇਹ ਸਨਮਾਨ ਦਸਿਆ ਹੈ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸਾਰਵਜਨਿਕ ਸਿਖਿਆ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਆ ਰਹੇ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਬਦਲਾਵਾਂ ਨੂੰ ਲੋਕ ਕਿੰਨੀਆਂ ਉਮੀਦ ਭਰੀਆਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਨਾਲ ਦੇਖ ਰਹੇ ਹਨ। ਸਿਖਿਆ



ਮੰਤਰੀ ਬਣਦੇ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਦਸ਼ਾ ਚੰਗੀ ਕਰਨ ਦੀ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਰਾਤ-ਦਿਨ ਇਕ ਕਰ ਦਿਤਾ। ਅਧਿਆਪਕ-ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਅਨੁਪਾਤ ਨੂੰ ਦਰੁਸਤ ਕਰਨ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਕਮਰਿਆਂ ਦੀ ਉਪਲਬਧਤਾ ਤੇ ਜੋਰ ਦਿਤਾ। ਨਾਲ ਹੀ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲਾਂ ਨੂੰ ਦੇਸ਼-ਵਿਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਟਰੇਨਿੰਗ ਦਿਵਾਈ ਗਈ। ਸਕੂਲਾਂ ਦੀਆਂ ਛੋਟੀਆਂ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਵੱਡੀਆਂ ਦਿਕਤਾਂ ਨੂੰ ਹਲ ਕਰਨ ਤੇ ਜੋਰ ਦਿਤਾ ਗਿਆ। ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਹੋਇਆ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਰਿਜਲਟ ਬਹੁਤ ਬੇਹਤਰ ਹੋਇਆ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਵਧਿਆ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਕਢ ਕੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਦਾਖਲ ਕਰਾਉਣ ਲਗੇ। ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਦੇ ਇਮਾਨਦਾਰ ਯਤਨ ਦਾ ਹੀ ਨਤੀਜਾ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਬੇਹਤਰੀਨ ਸਿਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਆਂਕਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਜੋ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਪੂਰੇ ਸਿਖਿਆ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਲਈ ਮਾਨ ਦੀ ਗਲ ਹੈ। ■



ਪਹਿਲੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਪੰ. ਜਵਾਹਰਲਾਲ ਨਹਿਰੂ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਨ 14 ਨਵੰਬਰ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼

ਨਹਿਰੂ ਜਿਹਾ ਤਿਆਗ ਅਤੇ ਬਲਿਦਾਨ ਕਿਸੇ ਨੇ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ – ਸਰਦਾਰ ਪਟੇਲ

1961 ਵਿਚ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਹਿਰੂ ਨੇ 'ਸਰਦਾਰ ਸਰੋਵਰ ਬੰਨ' ਦੀ ਨੀਂਹ ਰੱਖੀ। ਇਹ ਸਰਦਾਰ ਪਟੇਲ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਾਦਰ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਸੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅਜ਼ਾਦੀ ਅਤੇ ਵੰਡ ਦੇ ਕਠਿਨ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਬਖ਼ੂਬੀ ਸਾਥ ਦਿਤਾ ਸੀ। ਨਹਿਰੂ, ਪਟੇਲ ਦੇ ਬਹੁਤ ਚੰਗੇ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਕ ਸਨ, ਹਾਲਾਂਕਿ ਵਿਚਾਰਿਕ ਆਧਾਰ ਤੇ ਦੋਵਾਂ ਵਿਚ ਮਤਭੇਦ ਸਨ ਅਤੇ ਇਹ ਕੋਈ ਲੁਕੀ ਹੋਈ ਗਲ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਇਹ ਉਹ ਦੌਰ ਸੀ ਜਦ ਮਤਭੇਦ ਦਾ ਅਰਥ ਮਨਭੇਦ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਇਕ ਹੀ ਪਾਰਟੀ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦੇ ਹੋਏ ਨੇਤਾ, ਵਿਭਿੰਨ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਤੇ ਲਿਖਤ ਅਸਹਿਮਤੀਆਂ ਜਤਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਬਹਿਸ ਚਲਾਉਂਦੇ ਸਨ। ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਜਾਣ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਕਿ ਫਲਾਂ ਵਿਸ਼ੇ ਤੇ ਫਲਾਂ ਨੇਤਾ ਦੇ ਕੀ ਵਿਚਾਰ ਹਨ।

ਹਾਲ ਦੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਪਟੇਲ ਨੂੰ ਨਹਿਰੂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਦਸਣ

ਦਾ ਇਕ ਅਭਿਆਨ ਚਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕੁਝ ਇਸ ਅੰਦਾਜ਼ ਵਿਚ ਜਿਵੇਂ ਕਿ 500 ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਰਿਆਸਤਾਂ ਦੇ ਭਾਰਤ ਸੰਘ ਵਿਚ ਰਲੇ ਵਾਂ ਦੇ 'ਕਾਰਨਾਮੇ' ਵਿਚ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਹਿਰੂ ਦੀ ਕੋਈ ਭੂਮਿਕਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਸਭ ਕੁਝ ਇਕੱਲੇ 'ਗ੍ਰਹਿਮੰਤਰੀ' ਨੇ ਕਰ ਦਿਤਾ ਸੀ। ਅਤੇ ਕਸ਼ਮੀਰ ਦੀ ਸਮਸਿਆ ਸਿਰਫ ਅਤੇ ਸਿਰਫ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਨਹਿਰੂ ਦੀ ਦੇਣ ਸੀ, ਗ੍ਰਹਿ ਮੰਤਰੀ ਪਟੇਲ ਦਾ ਉਸ ਵਿਚ ਕੋਈ ਲੈਣਾ ਦੇਣਾ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਨਹਿਰੂ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਬਣਨ ਨੂੰ ਵੀ ਪਟੇਲ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਸਾਜ਼ਸ਼ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਵਿਚ ਤਾਂ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿਚ ਸੱਚੇ-ਝੂਠੇ ਕਿਸਿਆਂ ਨਾਲ ਭਰਿਆ, ਪੂਰਾ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਮੌਜੂਦ ਹੈ।

ਕਿਉਂ ਨਾ ਇਸ ਮੁਦੇ ਤੇ ਸਿਧੇ ਪਟੇਲ ਦੀ ਹੀ ਰਾਏ ਜਾਨ ਲਈ ਜਾਏ। ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਦੀਆਂ ਅਫਵਾਹਾਂ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਜਾ ਕੇ ਨਹਿਰੂ



ਅਤੇ ਪਟੇਲ ਦੇ ਪੱਤਰ ਪੜ੍ਹੇ ਜਾਣ। ਭਾਰਤ ਦੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਦਿਨ ਕਰੀਬ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਮੰਤਰੀ ਮੰਡਲ ਦੇ ਸਵਰੂਪ ਤੇ ਚਰਚਾ ਹੋ ਰਹੀ ਸੀ। 1 ਅਗਸਤ 1947 ਨੂੰ ਨਹਿਰੂ ਨੇ ਪਟੇਲ ਨੂੰ ਲਿਖਿਆ-

“ਕੁਝ ਹਦ ਤਕ ਰਸਮਾਂ ਨਿਭਾਉਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੋਣ ਤੇ ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮੰਤਰੀ ਮੰਡਲ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਣ ਦਾ ਸੱਦਾ ਦੇਣ ਦੇ ਲਈ ਲਿਖ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਇਸ ਪੱਤਰ ਦਾ ਕੋਈ ਮਹੱਤਵ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ ਮੰਤਰੀ ਮੰਡਲ ਦੇ ਮਜ਼ਬੂਤ ਸਤੰਭ ਹੋ।”

ਪਟੇਲ ਨੇ 3 ਅਗਸਤ ਨੂੰ ਨਹਿਰੂ ਦੇ ਪੱਤਰ ਦੇ ਜਵਾਬ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ-

“ਤੁਹਾਡੇ 1 ਅਗਸਤ ਦੇ ਪੱਤਰ ਦੇ ਲਈ ਅਨੇਕ ਧੰਨਵਾਦ। ਇਕ-ਦੂਜੇ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਸਾਡਾ ਜੋ ਅਨੁਰਾਗ ਅਤੇ ਪ੍ਰੇਮ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਲਗਭਗ 30 ਸਾਲ ਦੀ ਸਾਡੀ ਜੋ ਅਖੰਡ ਦੋਸਤੀ ਹੈ, ਉਸ ਨੂੰ ਦੇਖਦੇ ਹੋਏ ਰਸਮਾਂ ਦੇ ਲਈ ਕੋਈ ਸਥਾਨ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ। ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਮੇਰੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਬਾਕੀ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਲਈ ਤੁਹਾਡੇ ਅਧੀਨ ਰਹਿਣਗੀਆਂ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਉਸ ਲਕਸ਼ ਦੀ ਸਿੱਧੀ ਦੇ ਲਈ ਮੇਰੀ ਸ਼ੁਧ ਅਤੇ ਸੰਪੂਰਨ ਵਫ਼ਾਦਾਰੀ ਅਤੇ ਨਿਸ਼ਠਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਵੇਗੀ, ਜਿਸ ਦੇ ਲਈ ਤੁਹਾਡੇ ਜਿਹਾ ਤਿਆਗ ਅਤੇ ਬਲਿਦਾਨ ਭਾਰਤ ਦੇ ਹੋਰ ਕਿਸੇ ਪੁਰਸ਼ ਨੇ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਸਾਡਾ ਸਮਿਲਨ ਅਤੇ ਸੰਯੋਜਨ ਅਟੁਟ ਅਤੇ ਅਖੰਡ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸੇ ਵਿਚ ਸਾਡੀ ਸ਼ਕਤੀ ਸਮਾਈ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਆਪਣੇ ਪੱਤਰ ਵਿਚ ਮੇਰੇ ਲਈ ਜੋ ਭਾਵਨਾਂ ਪ੍ਰਗਟ ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ, ਉਸ ਦੇ ਲਈ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡਾ ਧਨਵਾਦੀ ਹਾਂ।”

ਪਟੇਲ ਦੀਆਂ ਇਹ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਸਿਰਫ ਰਸਮੀ ਨਹੀਂ ਸਨ। ਆਪਣੀ ਮੌਤ ਦੇ ਕਰੀਬ ਡੇਢ ਮਹੀਨੇ ਪਹਿਲਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਨਹਿਰੂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ

ਜੋ ਕਿਹਾ ਸੀ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵਸੀਅਤ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ। 2 ਅਕਤੂਬਰ 1950 ਨੂੰ ਇੰਦੌਰ ਵਿਚ ਇਕ ਮਹਿਲਾ ਕੇਂਦਰ

ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕਰਨ ਗਏ ਪਟੇਲ ਨੇ ਆਪਣੇ ਭਾਸ਼ਨ ਵਿਚ ਕਿਹਾ-“ਹੁਣ ਜਿਹਾ ਕਿ



ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਸਾਡੇ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਹਨ, ਨਹਿਰੂ ਹੀ ਸਾਡੇ ਨੇਤਾ ਹਨ। ਬਾਪੂ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਉਤਰਾਧਿਕਾਰੀ ਨਿਯੁਕਤ ਕੀਤਾ ਸੀ ਅਤੇ ਇਸ ਦਾ ਐਲਾਨ ਵੀ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਹੁਣ ਇਹ ਬਾਪੂ ਦੇ ਸਿਪਾਹੀਆਂ ਦਾ ਕਰਤੱਵ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਾ ਪਾਲਨ ਕਰਨ ਅਤੇ ਮੈਂ ਇਕ ਗੈਰ ਵਫ਼ਾਦਾਰ ਸਿਪਾਹੀ ਨਹੀਂ ਹਾਂ।”

(‘ਸਰਦਾਰ ਪਟੇਲ ਦਾ ਪੱਤਰ ਵਿਵਹਾਰ, 1945-50’ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ-ਨਵਜੀਵਨ ਪਬਲੀਸ਼ਿੰਗ ਹਾਊਸ, ਅਹਿਮਦਾਬਾਦ)

ਸਾਫ ਹੈ, ਪਟੇਲ ਅਤੇ ਨਹਿਰੂ, ਦੋਵੇਂ ਇਕ ਹੀ ਰਾਹ ਦੇ ਰਾਹੀਂ ਸਨ। ਦੋਵੇਂ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਦੇ ਚੇਲੇ ਸਨ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦੀ ਆਧੁਨਿਕ, ਲੋਕਤੰਤਰਿਕ, ਧਰਮ ਨਿਰਪੱਖ ਗਣਰਾਜ ਬਨਾਉਣ ਦੇ ਉਸ ਸੁਫਲ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਸਨ ਜਿਸ ਨੂੰ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਨੇ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਅੰਦੋਲਨ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਦੇਸ਼ ਵਾਸੀਆਂ ਵਿਚ ਜਗਾਇਆ ਸੀ। ■

ਸੜਕ-ਦੁਰਘਟਨਾਂ ਵਿਚ ਜਖਮੀਆਂ ਦਾ ਫ੍ਰੀ ਇਲਾਜ ਕਰਾਏਗੀ ਸਰਕਾਰ

ਅੱਗਜਨੀ ਅਤੇ ਐਸਿਡ ਅਟੈਕ ਦੇ ਪੀੜਤਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਮਿਲੇਗੀ ਸੁਵਿਧਾ

ਦਿੱ

ਲੀ ਸਰਕਾਰ ਇਕ ਹੋਰ ਮਨੁੱਖੀ ਕਦਮ। ਹੁਣ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਦੀਆਂ ਸੜਕਾਂ ਤੇ ਕਿਸੇ ਦੁਰਘਟਨਾ ਵਿਚ ਜਖਮੀ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਇਲਾਜ ਦੇ ਲਈ ਤੜਫ਼ਨਾ ਨਹੀਂ ਪਏਗਾ। ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਜ਼ਖਮੀਆਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨਜ਼ਦੀਕੀ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਫ੍ਰੀ ਇਲਾਜ ਦੀ ਸੁਵਿਧਾ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਸਿਰਫ਼ ਇੰਨਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਇਲਾਜ ਦੇ ਲਈ ਹਸਪਤਾਲ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਦੋ ਹਜ਼ਾਰ ਰੁਪਏ ਦਾ ਇਨਾਮ ਵੀ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਵਿਚ ਹੋਈ ਕੈਬਿਨੇਟ ਦੀ ਬੈਠਕ ਵਿਚ ਨੈਦਾਨਿਕ ਪ੍ਰਤੀਸ਼ਠਾਨ (ਰਜਿਸਟਰੇਸ਼ਨ ਅਤੇ ਨਿਯਮਨ) ਅਧਿਨਿਯਮ ਨੂੰ ਮੰਜੂਰੀ ਦੇ ਦਿਤੀ ਗਈ। ਕੈਬਿਨੇਟ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਦੇ ਤਹਿਤ ਜਖਮੀ ਨੂੰ ਤੁਰੰਤ ਕਿਸੇ ਵੀ (ਨਿਜੀ ਜਾਂ ਸਰਕਾਰੀ) ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਭਰਤੀ ਕਰਵਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਲਾਜ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਖਰਚੇ ਨੂੰ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਸਹਿਨ ਕਰੇਗੀ।

ਸਿਹਤ ਮੰਤਰੀ ਸਤੇਂਦਰ ਜੈਨ ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਇਕ ਮਹਤਵਪੂਰਨ ਫੈਸਲਾ ਕਰਾਰ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਦਸਿਆ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਹਰ ਸਾਲ ਕਰੀਬ ਅੱਠ ਹਜ਼ਾਰ ਸੜਕ ਦੁਰਘਟਨਾਵਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ

ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਕਰੀਬ 15 ਹਜ਼ਾਰ ਲੋਕ ਜਖਮੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਜਖਮੀਆਂ ਨੂੰ ਤੁਰੰਤ ਇਲਾਜ ਨਾ ਮਿਲਣ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਹਰ ਸਾਲ ਕਰੀਬ 1600 ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਜਾਨ ਤੋਂ ਹੱਥ ਧੋਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਜੈਨ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਜੇ ਦੁਰਘਟਨਾ ਦੇ ਬਾਅਦ ਪੁਲੀਸ ਜਾਂ ਕੋਈ ਹੋਰ, ਜਖਮੀ ਨੂੰ ਪਹਿਲਾ ਸਰਕਾਰੀ ਹਸਪਤਾਲ ਲੈ ਜਾਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜਦ ਕਿ ਪਹਿਲਾਂ ਇਕ ਘੰਟਾ ਕਾਫੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਐਸੇ ਵਿਚ ਕਈ ਵਾਰ ਸਮੇਂ ਤੇ ਮਰੀਜ਼ ਹਸਪਤਾਲ ਨਹੀਂ ਪਹੁੰਚ ਪਾਉਂਦਾ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਹਾਲਤ ਵਿਗੜ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਈ ਵਾਰ ਮੌਤ ਵੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਇਸ ਫੈਸਲੇ ਦੇ ਬਾਅਦ ਹੁਣ ਮਰੀਜ਼ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਭਰਤੀ ਕਰਵਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਥੇ ਇਲਾਜ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਖਰਚ ਨੂੰ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਸਹਿਨ ਕਰੇਗੀ। ਮਾਣਯੋਗ ਉਪਰਾਜਪਾਲ ਦੀ ਮੰਜੂਰੀ ਦੇ ਬਾਅਦ ਇਹ ਯੋਜਨਾ ਲਾਗੂ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ।

ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਅੱਗ ਤੇ ਐਸਿਡ ਅਟੈਕ ਵਿਚ ਜਖਮੀ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਵੀ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਸੁਵਿਧਾ ਉਪਲਬਧ ਕਰਾਏਗੀ। ਸਿਹਤ ਮੰਤਰੀ ਸਤੇਂਦਰ ਜੈਨ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਅੱਗ ਨਾਲ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਦੁਰਘਟਨਾ ਵਿਚ ਜਖਮੀ ਤੇ ਐਸਿਡ ਅਟੈਕ ਵਿਚ ਜਖਮੀ ਨੂੰ ਵੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਫ੍ਰੀ ਇਲਾਜ ਦੀ ਸੁਵਿਧਾ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਹਰ ਸਾਲ ਸੈਂਕੜਿਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਅੱਗਜਨੀ

ਦੀਆਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਕਾਫੀ ਲੋਕ ਜਖਮੀ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ■





ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਅਨੇਕਾ ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ

ਬੱਚਿਆਂ ਨੇ ਲਈ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੇ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਦੀ ਸਹੁੰ

ਸਾਲ 2018 ਦੀ 26 ਜਨਵਰੀ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲੀ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਨਵਾਂ ਅਰਥ ਲੈ ਕੇ ਆਈ। ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਨਾ ਸਿਰਫ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਦੇ

ਮੁਤਾਬਕ ਭਾਰਤ ਬਨਾਉਣ ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਲਿਆ ਬਲਕਿ ਉਸ ਦੇ ਇਕ-ਇਕ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਪਾਠ ਵੀ ਲਿਆ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ, ਸਾਰੇ ਬੱਚਿਆਂ ਅਤੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੇ ਸਹੁੰ ਲਈ ਕਿ



ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਸੁਫਨਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਨਾਲ ਸਾਕਾਰ ਕਰਾਂਗੇ। ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਸਭਾਵਾਂ ਵਿਚ ਸਹੁੰ ਦੇ ਬਾਅਦ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਹਰ ਕਲਾਸ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਪੀਰੀਅਡ ਵਿਚ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਇਕ-ਇਕ ਸ਼ਬਦ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਸੁਫਨੇ ਤੇ ਹੀ ਚਰਚਾ ਹੋਈ। ਇਹ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਰਿਕਾਰਡ ਸੀ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਕਰੀਬ 40 ਲਖ ਬੱਚਿਆਂ ਅਤੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੇ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਇੰਨੀ ਵੱਡੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਾਂ ਦੀ ਸਹੁੰ ਲਈ।

ਸਰਕਾਰੀ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਵਿਕਾਸ ਸਕੂਲ ਪਹੁੰਚ ਕੇ ਝੰਡਾ ਲਹਿਰਾਇਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਕਿ ਭਾਰਤ ਦੇ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਵਿਚ ਜੋ ਸੁਫਨਾ ਰਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ, ਉਹ ਸਿਰਫ ਸਿਖਿਆ ਦੀ ਮਦਦ ਨਾਲ ਪੂਰਾ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਸਿਖਿਆ ਦਾ

ਮਕਸਦ ਹੈ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕਰਨਾ, ਤਾਂ ਕਿ ਉਹ ਸਹੀ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਲੈ ਜਾ ਸਕੇ। ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਨਾਮ ਲਿਖੇ ਪੱਤਰ ਨੂੰ ਵੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਿਆ ਗਿਆ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸੰਵਿਧਾਨ ਨਿਰਮਾਤਵਾਂ ਦੇ ਸੁਫਨਿਆਂ ਨੂੰ ਸਕਾਰ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਸਿਖਿਆ ਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰਨ ਦੀ ਅਪੀਲ ਸੀ। ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਖੁਦ ਸਿਵਲ ਲਾਈਸ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਐਨਸੀਈਆਰਟੀ ਦੀ ਕਿਤਾਬ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਹੀ ਪੇਜ ਵਿਚ ਮੌਜੂਦ ਹੈ। ਹਰ ਸਬਜੈਕਟ ਦੇ ਟੀਚਰ ਨੂੰ ਇਸ ਨੂੰ ਸਿਖਿਆ ਨਾਲ ਜੋੜਦੇ ਹੋਏ ਪੜ੍ਹਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ, ਸਰਕਾਰੀ, ਐਮਸੀਡੀ... ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਾਰੇ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਸੰਵਿਧਾਨ ਦੀ ਪ੍ਰਸਤਾਵਨਾ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਹੈ। ■



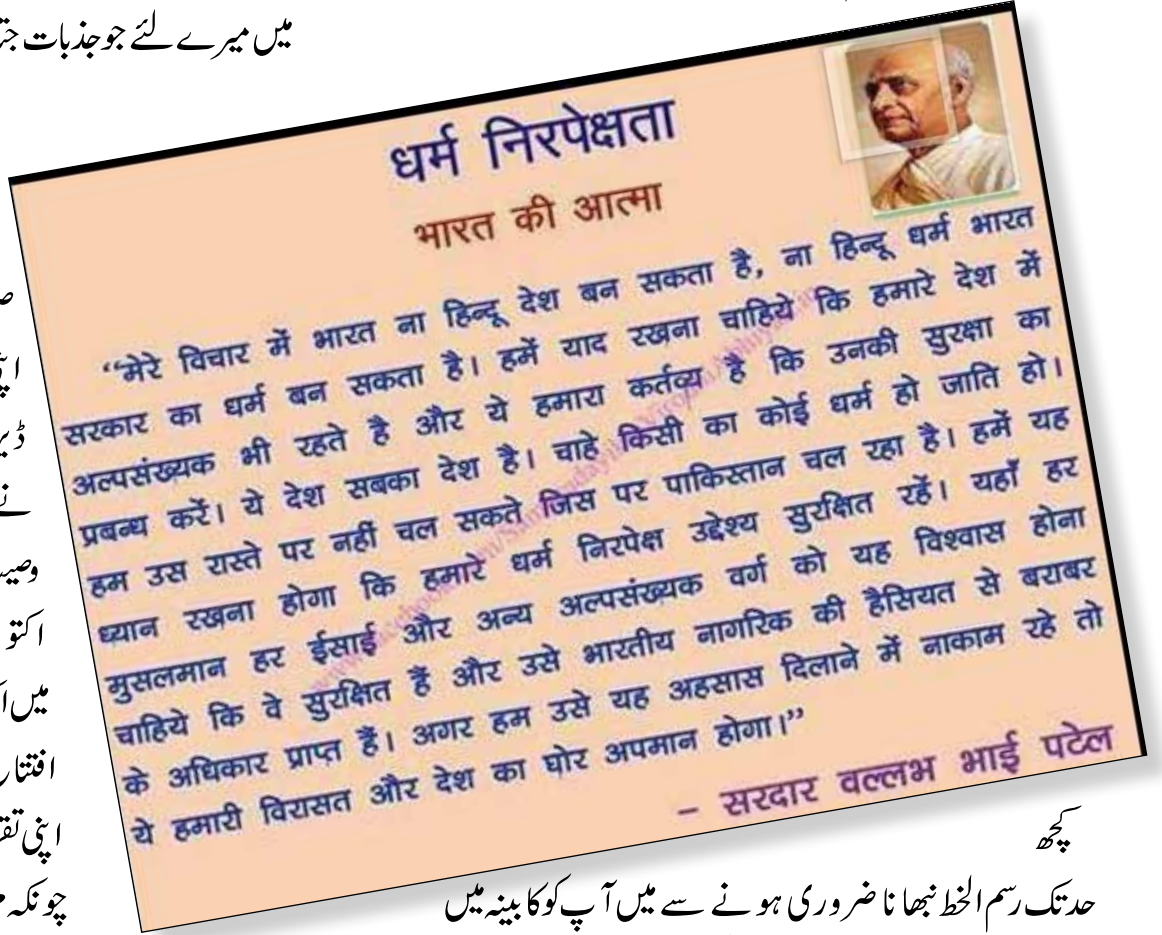
آدمی نے نہیں کیا ہے۔ ہماری شمولیت اور تنظیم اٹوٹ اور غیر منقسم ہے اور اُسی میں ہماری طاقت مضمر ہے۔ آپ نے اپنے خط میں میرے لئے جو جذبات جتائیں ہیں، اس کے لئے میں آپ کا شکر گزار ہوں۔

بھارت کی آزادی کا دن قریب آ رہا تھا۔ کا بینہ کے ظاہری شکل پر چرچا ہو رہی تھی۔ یکم اگست 1947 کو نہرو نے ٹیل کو لکھا۔

ٹیل کی یہ جذبات صرف رسمہ نہیں تھی۔ اپنی موت کے قریب ڈیڑھ مہینے پہلے انہوں نے نہرو کو لیکر جو کہا وہ کسی وصیت کی طرح ہے۔ 2 اکتوبر 1950 کو اندور میں ایک خواتین مرکز کا افتتاح کرنے گئے ٹیل نے اپنی تقریر میں کہا - " اب چونکہ مہاتما ہمارے بچ نہیں ہیں، نہرو ہی ہمارے لیڈر ہیں۔ باپو نے انہیں اپنا جانشین مقرر کیا تھا اور اس کا اعلان بھی کیا تھا۔ اب یہ باپو کے سپاہیوں کا فرض ہے کہ وہ ان کی ہدایت کی پیروی کریں اور میں ایک غیر وفادار سپاہی نہیں ہوں۔"

(سر دار ٹیل کا خط سلوک '1945-50' شائع - نوجیون پبلیشنگ ہاؤس 'احمد آباد')

صاف ہے، ٹیل اور نہرو، دونوں ایک ہی راہ کے راہی تھے۔ دونوں گاندھی جی کے شاگرد تھے اور بھارت کو جدید ڈیموکریٹک، سیکولر، جمہوریہ بنانے کے اُسی خواب سے جڑے تھے جس سے گاندھی جی نے آزادی کی تحریک کے دوران مقامیوں میں جگایا تھا۔



کچھ حد تک رسم الخط نبھانا ضروری ہونے سے میں آپ کو کا بینہ میں شامل ہونے کا دعوت نامہ دینے کیلئے لکھ رہا ہوں۔ اس خط کا کوئی اہمیت نہیں ہے، کیوں کہ آپ تو کا بینہ کے مضبوط ستون ہیں۔"

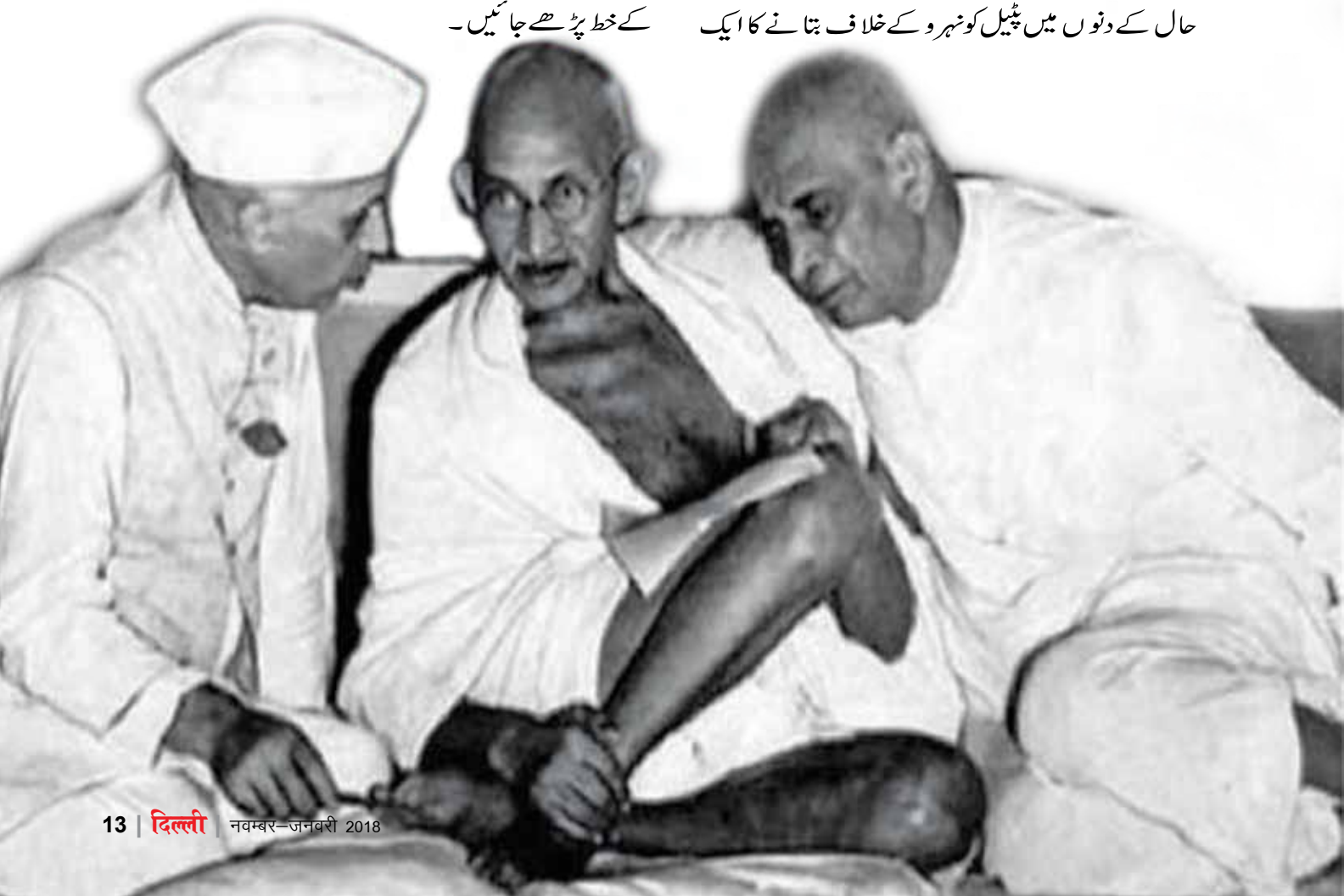
ٹیل نے 3 اگست کو نہرو کے خط کے جواب میں لکھا - " آپ کے یکم اگست کے خط کیلئے بہت بہت شکریہ۔ ایک دوسرے کے لئے ہمارا جولوگاؤ اور محبت رہی ہے اور لگ بھگ 30 سال کی ہماری جو ناگوار دوستی ہے، اُسے دیکھتے ہوئے رسمہ کیلئے کوئی جگہ نہیں رہ جاتی۔ امید ہے کہ میری خدمات باقی کی زندگی کیلئے آپ کے تحت رہیں گی۔ آپ کو اس مقصد کی تسلیم کیلئے میری خالص اور مکمل وفاداری اور صداقت حاصل ہوگی، جس کیلئے آپ کی جیسی ایثار اور قربانی بھارت کے دوسرے کسی

نہرو جیسا ایثار اور قربانی کسی نے نہیں کیا۔ سردار پٹیل

مہم چل رہا ہے۔ کچھ اس انداز میں جیسے کی 500 سے زیادہ ریاستوں کے بھارت سندھ میں ضم کے کارناموں، میں وزیر اعظم نہرو کی کوئی کردار ہی نہیں تھی، سب کچھ اکیلے 'وزیر خارجہ' پٹیل نے کر ڈالا تھا۔ اور کشمیر کا مسئلہ صرف اور صرف 'وزیر اعظم' نہرو کی دین تھی، وزیر خارجہ پٹیل کا اس سے کوئی لینا دینا نہیں تھا۔ نہرو کے وزیر اعظم بننے کو بھی پٹیل کے خلاف سازش کی طرح پیش کیا جاتا ہے۔ سوشل میڈیا میں تو اس سلسلے میں سچے جھوٹے قصوں سے بھرا، پورا انصاب تعلیم موجود ہے۔ کیوں نہ اس مدعے پر کیوں نہ سیدھے پٹیل کی ہی رائے جان لی جائے۔ سوشل میڈیا کی افواہوں سے باہر جا کر نہرو اور پٹیل کے خط پڑھے جائیں۔

1961 میں وزیر اعظم نہرو نے سردار سروور باندھ کی بنیاد رکھی۔ یہ سردار پٹیل کے برعکس ان کی عاجزانہ خراج عقیدت تھی جنہوں نے آزادی اور بٹوارے کے پیچیدہ دنوں میں انکا بخوبی ساتھ دیا تھا۔ نہرو پٹیل کے خصوصی مداح تھے، حالانکہ تصوراتی بنیاد پر دونوں میں اختلافات تھے اور یہ کوئی چھپی بات نہیں تھی۔ یہ وہ دور تھا جب اختلافات کا مطلب منبھید نہیں ہوتا تھا اور ایک ہی پارٹی میں رہتے ہوئے لیڈر، مختلف موضوعات پر لکھے ہوئے اختلافات جتاتے ہوئے بحث چلاتے تھے۔ ساری دنیا جان چکی تھی کہ فلا نہ مضامین پر فلا نہ لیڈر کے کیا خیال ہیں۔

حال کے دنوں میں پٹیل کو نہرو کے خلاف بتانے کا ایک



سڑک حادثہ میں زخمیوں کا مفت علاج کروائے گی سرکار

آتشزدگی اور ایسڈ اٹیک کے متاثرین کو بھی ملے گی سہولیت

جناب جین نے کہا کہ ابھی حادثے کے بعد پولیس یا کوئی دوسرے زخمی کو پہلے سرکاری اسپتال لے جانے کی کوشش کرتے ہیں۔ جب کہ پہلا ایک گھنٹہ کافی اہم ہوتا ہے۔ ایسے میں کئی بار وقت پر مریض اسپتال نہیں پہنچ پاتا اور اس کی حالت بگڑ جاتی ہے اور کئی بار موت بھی ہو جاتی ہے۔ اس فیصلے کے بعد اب مریض کو کسی بھی اسپتال میں بھرتی کروایا

جاسکتا ہے۔ یہاں علاج کے دوران آنے والے خرچ کو دہلی سرکار برداشت کرے گی۔ عزت مآب لفٹینینٹ گورنر کی منظوری کے بعد یہ یو جی ٹی کو ہو جائے گی۔

اسی کے ساتھ آتشزدگی اور ایسڈ اٹیک میں زخمی ہونے والے کو بھی دہلی سرکار سہولیت دستیاب کرائے گی۔ وزیر صحت ستمبر جین نے بتایا کہ آگ میں ہونے والے حادثے میں زخمی والی ایسڈ

اٹیک میں زخمی کو بھی کسی بھی اسپتال میں مفت علاج کی سہولیت دی جائے گی۔ دہلی میں ہر سال سینکڑوں کی تعداد میں آتشزدگی کا حادثہ ہوتا ہے۔ اس میں کافی لوگ زخمی ہو جاتے ہیں۔ ■

دہلی سرکار کا ایک اور انسانی قدم۔ اب ملک کی راجدھانی کی سڑکوں پر کسی حادثے میں زخمی شخص کو علاج کیلئے ٹرپنا نہیں پڑے گا۔ سرکار نے فیصلہ کیا ہے کہ زخمیوں کو کسی بھی نزدیکی اسپتال میں مفت علاج کی سہولت دی جائے گی۔ یہی نہیں زخمی کو علاج کیلئے اسپتال پہنچانے والے شخص کو دو ہزار روپے کا انعام بھی دیا جائے گا۔

وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال کی صدارت میں ہونی کا بینہ کی میٹنگ میں کلینیکل قیام (رجسٹریشن و ضابطہ اخلاق) ایکٹ کو منظوری

دے دی گئی۔ علاج کے دوران آنے والے خرچ کو دہلی سرکار برداشت کرے گی۔

وزیر صحت ستیندر جین نے اسے ایک اہم فیصلہ قرار دیتے ہوئے بتایا کہ دہلی میں ہر

سال قریب 8000 سڑک حادثے ہوتے ہیں جن میں قریب 15000 لوگ زخمی ہوتے ہیں۔ زخمیوں کو فوراً علاج نہ ملنے کی وجہ سے ہر سال قریب 1600 لوگوں کو جان سے ہاتھ دھونا پڑتا ہے۔



کی کتاب کے پہلے ہی صفحے میں موجود ہے۔ ہر سبجیکٹ کے ٹیچر کو اسے تعلیم سے جوڑتے ہوئے پڑھانا چاہیئے۔ پرائیویٹ، سرکاری، ایم سی ڈی دہلی کے سارے اسکولوں سے ہم نے آئین کے تمہید کو پڑھانے کو کہا ہے۔ ■

لائن کے راجکیہ پرتیہا وکاس ودیا لیہ پہونچ کر پرچم لہرایا۔ انہوں نے بچوں سے کہا کہ بھارت کے آئین کے تمہید میں جو خیال رکھا گیا ہے، وہ صرف تعلیم کی مدد سے پورا ہو سکتا ہے۔ تعلیم کا مقصد عوام کو بیدار کرنا، تاکہ وہ صحیح جانب میں سماج کو لے جاسکیں۔ سسودیا نے کہا کہ این سی ای آر ٹی





دہلی کے اسکولوں میں انوکھا یوم جمہوریہ

بچوں نے لی آئین کے تمہید کا حلف

میں لکھے ایک ایک حرف اور بھارت کے خواب پر ہی چرچا ہوئی۔ یہ اپنے آپ میں ریکارڈ تھا کہ سرکاری اور پرائیویٹ اسکولوں کے قریب چالیس لاکھ بچوں اور اساتذہ نے پہلی بار اتنی بڑی تعداد میں آئین کے تمہید کا حلف لیا۔

اسی کے ساتھ وزیر تعلیم منیش سسودیا کا طالبعلم کے نام لکھے خط کو بھی اسکولوں میں بھی پڑھا گیا، جس میں انہوں نے آئین سازی کے خوابوں کو حقیقت میں تبدیل کرنے کے لئے تعلیم کا استعمال کرنے کی درخواست تھی۔ جناب سسودیا نے خود سول

سال 2018 کی 26 جنوری دہلی کے اسکولی بچوں کے لئے تمہید کی مطابقت بھارت بنانے کا تہیہ کیا بلکہ اس کے ایک ایک حرف کا درس بھی کیا۔

دہلی کے سبھی اسکولوں میں، سبھی بچوں اور اساتذہ نے حلف لیا کہ آئین کی تمہید میں لکھے بھارت کے خواب کو تعلیم کے ذریعہ حقیقت میں تبدیل کریں گے۔ دعائیہ محفل میں حلف کے بعد سبھی اسکولوں میں ہر کلاس کے پہلے پیئرڈ میں آئین کے تمہید



منیش سسودیا کو 'وزیر مالیات' کا اعزاز



دہلی کے نائب وزیر اعلیٰ اور وزیر تعلیم منیش سسودیا کو سابق صدر جمہوریہ پرنب مکھرجی نے فائنٹسٹ ایجوکیشن منسٹر (ملک کے سب سے بہترین وزیر تعلیم) کا اعزاز دیا۔ ایک تعلیمی تھینک ٹینک، دافیفٹھ اسٹیٹ، کی جانب سے تعلیم پر منعقدہ قومی کانفرنس میں سابق صدر جمہوریہ پرنب مکھرجی نے جناب سسودیا کو یہ اعزاز دیا۔ وزیر تعلیم منیش سسودیا نے کہا کہ وہ پرنب مکھرجی سے ملے ایوارڈ سے وہ کافی عزت مند محسوس کر رہے ہیں۔ انہوں نے اس موقعہ کو بچہ خاص بتایا کہ یہ ایوارڈ سابق صدر جمہوریہ پرنب مکھرجی کے جنم دن پر ان کے ہی ہاتھوں حاصل ہوا۔

رہے ہیں۔ وزیر۔ بننے ہی انہوں نے جس طرح سرکاری اسکولوں کی حالت بہتر کرنے کی سمت میں رات دن ایک کر دیا۔ استاذ۔ طالب علم تناسب کو درست کرنے سے لیکر کمروں کی دستیابی پر زور دیا۔ ساتھ ہی اساتذہ اور پرنسپلوں کو دلش۔ بدلیش میں تربیت دلوائی گئی۔ اسکولوں کی چھوٹی سے لیکر بڑی مسائل کو حل کرنے پر زور دیا گیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سرکاری اسکولوں کا رزلٹ بہت بہتر ہوا۔ دہلی کے لوگوں کا وشواس بڑھا اور تمام لوگ پرائیویٹ اسکول سے اپنے بچوں کو نکال دہلی کے سرکاری اسکولوں میں داخلہ کرانے لگے۔ جناب سسودیا کی ایمانداریہ کوشش کا ہی نتیجہ ہے کہ انہیں ملک کا سب سے بہتر وزیر تعلیم مانا گیا ہے جو دہلی کے پورے ایجوکیشن محکمہ کیلئے فخر کی بات ہے۔ ■

دہلی کے وزیر اعلیٰ اروند کچریوال نے منیش سسودیا کو مبارکباد دی۔ انہوں نے کہا کہ یہ ایوارڈ سب سے افادیت انسان سے ملا ہے۔ جناب سسودیا کو ملایہ اعزاز بتاتا ہے کہ دہلی کی عوامی تعلیمی شعبہ میں آرہے مثبت تبدیلی کو لوگ کتنی امید بھری نگاہوں سے دیکھ



Manish Sisodia
@msisodia

Honored to receive the special award 'Finest Education Minister' from @CitiznMukherjee (Hon'ble Ex-President Of India) on the special occasion of his 83rd birthday.

I wish many many happy returns of the day to him!

3:17 PM - Dec 11, 2017

839 2,350 6,719



Arvind Kejriwal
@ArvindKejriwal

Congratulations Manish. V well deserved award and recd from the most appropriate person [twitter.com/msisodia/statu...](https://twitter.com/msisodia/status/938111111111111111)

3:59 PM - Dec 11, 2017

303 1,864 5,407



اسکولی بچوں کی صحت پر نظر رکھیں گے ڈاکٹر انکل

مطابق ہر اسکول کلینک میں ایک ڈاکٹر اور ایک اسسٹنٹ ہوگا تاکہ بچوں کا باقاعدگی سے ہیلتھ چیک اپ ہو سکے۔ دہلی میں قریب 1100 سرکاری اسکول ہیں۔ ایک اسکول کلینک سے تین اسکولوں کو جوڑ کر بھی اسکولی بچوں کے لئے ہیلتھ چیک اپ کا انتظام کیا جائے گا۔

اسکول کلینک میں بچوں کو ہونے والی بیماریوں پر ہی دھیان نہیں دیا جائے گا، خون کی کمی، کم سننے اور دانتوں کے مسئلہ جیسی پریشانیوں پر بھی نظر رکھی جائے گی۔ دہلی کی تعلیمی انتظام میں آرہی مثبت بدلاؤ کے آرڈر میں اسے ایک جدید تجربہ مانا جا رہا ہے۔ ■

دہلی سرکار نے اسکولی تعلیم کے معیار میں نیارنگ جوڑتے ہوئے بچوں کی صحت کی مسلسل نگرانی کا فیصلہ کیا ہے۔ اس کے لئے بھی سرکاری اسکولوں کے بچوں کے لئے ڈاکٹر کا انتظام کیا جائے گا۔ اس طرح ہر بچے کی ہیلتھ اسکیئرنگ ہوتی رہے گی۔ اس کے لئے 350 سرکاری اسکولوں میں محلہ کلینک کی طرز پر اسکول کلینک کھولیں گے۔ بچوں کی صحت کو لیکر برتی گئی لاپرواہی زندگی بھر تکلیف دے سکتی ہے۔ لیکن اکثر شعور کی کمی یا غریبی کی وجہ سے سرکاری اسکول میں پڑھنے والے بچوں کے ماں باپ اس جانب دھیان نہیں دے پاتے ہیں۔ ایسے میں دہلی کی سرکار نے یہ حساس قدم اٹھایا ہے۔ منصوبہ کے

خدمات کا استعمال 25 لاکھ لوگ کرتے ہیں۔ اس میں سب سے زیادہ او بی سی سٹوفیکٹیٹ استعمال ہوتا ہے۔ اس سال میں اب تک 1.67 لاکھ سٹوفیکٹیٹ بنوائے ہیں۔

جاسکے گی۔

ہوم ڈیوری خدمات کا استعمال کرنے کیلئے نجی کمپنیاں ایک کال سینٹر تیار کریں گی۔ اس کال سینٹر صارفین کو اپنے کام متعلقہ جانکاری اور گھر پر ملنے کا وقت بتانا ہوگا۔ اس کے بعد متعلقہ اہلکار صارفین کے گھر جائے گا۔ وہیں پر متعلقہ کام کے کاغذات اسکیں کرے گا اور سٹوفیکٹیٹ مہیا کرائے گا۔ صبح 7 سے رات 10 بجے تک یہ سہولت دستیاب ہوگی۔

دہلی سرکار کے ایک مطالعہ کے مطابق ایک سال میں اوسطاً ان 40

یہ ہیں اہم خدمات

● شادی سرٹیفکیٹ

● بیوہ پینشن

● غریب خواتین کی بیٹی کی شادی کا ثبوت

● تعمیراتی سرگرمیوں میں لگے ملازمین کا

● معاہدہ و تجدید کاری

● پانی کے کنیکشن، سیور کنیکشن، کنیکشن

● ری اوپن، کنیکشن کاٹنا

● غریب خاندانوں کا بیمہ کارڈ

● اولڈ ایج پینشن، معذور پینشن، دہلی فیملی

● بینیفٹ اسکیم

● گاڑی آر سی، آر سی میں بدلاؤ، مالکانہ حق

● بدلاؤ دیگر

● او بی سی، اے سی، ایس ٹی سرٹیفکیٹ،

● ٹومیسائل، تنخواہ پرمان پتر، جنم موت

● ثبوت حکم، زمین ریکارڈ، شادی رجسٹریشن

ان 8 محکموں کی 40 خدمات آئیں گی دائرے میں

40	● آمدنی محکمہ
11	● نقل و حمل محکمہ
03	● سماج فلاح و بہبود
02	● خوراک و رسدات کی فراہمی
04	● جل بورڈ
02	● مزدور ڈیپارٹمنٹ
02	● خواتین کے فلاح و بہبود کے محکمہ
01	● قانون محکمہ



Delhi Jal Board



delhi.gov.in

Govt. of NCT of Delhi



WE CARE
YOU SHARE



Delhi Transport Corporation





دہلی سرکار جنتا کے دُوار

40 سہولتیں ملیں گی گھر بیٹھے

نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا کے مطابق ایسی خدمات مہیا کرانے والا دہلی پہلی ریاست ہوگی۔ ابھی ان خدمات کیلئے عوام کو سرکاری دفاتروں پر بار بار چکر لگانے ہوتے تھے۔ اور کئی خدمات کا فائدہ لینے میں مہینوں کا وقت لگ جاتا تھا۔ اس خدمات کو آسان بنانے کیلئے سرکار نے یہ فیصلہ لیا ہے۔ اس اسکیم کی مدد سے عام آدمی کو اس کے گھر پر ہی ان خدمات کو دستیاب کرایا جائے گا۔ اُسے فارم لینے یا جمع کرانے کیلئے سرکاری دفاتر آنے کی ضرورت نہیں ہوگی۔ صرف اُن سٹوفکیٹ کیلئے جسمانی جانچ کی ضرورت ہوگی، جن میں قانونی موجودگی کو لازم کیا گیا ہے۔

جلد ہی ان محکموں کی 40 خدمات کیلئے سرکار ایک نجی کمپنی سے معاہدہ کرے گی۔ اسکے تحت نجی کمپنیاں تعین کئے گئے کام کیلئے فیس طے کریں گی اور اس فیس ادائیگی کے بعد یہ خدمت عام آدمی کو دستیاب کرائی

دہلی کے عوام کو سہولتیں دینے کیلئے ریاستی حکومت لگاتار نئی نئی کوششیں کرتی رہتی ہے۔ اسی کے تحت اب تمام ضروری خدمات کے لئے اُسے دفاتروں کے چکر نہیں لگانے پڑیں گے۔ ملازمین ان کے گھر جا کر ہی تمام ظاہر داری پوری کریں گے۔

ادبی سی سٹوفکیٹ، شادی سرٹیفکیٹ سمیت پیدائش۔ موت سٹوفکیٹ جیسی ضروری خدمات اب دہلی والوں کو گھر بیٹھے دستیاب ہوگی۔ 8 محکموں کی 40 خدمات کیلئے سرکار نے نجی شعبہ کی مدد لینے کا فیصلہ کیا ہے۔ ان خدمات کیلئے عوام کو صرف ایک کال سینٹر پر اپنے متعلقہ کام کی جانکاری دینی ہوگی اور آسانی سے سرکاری خدمات گھر بیٹھے ہی عوام کو دستیاب ہو جائیں گی۔ قریب 25 لاکھ لوگوں کو فائدہ ہونے کا اندازہ لگائی جا رہی ہے۔

بچوں پر پتھر چلانے چاہیے۔ بھارت سنت - مہاتماؤں کا دلش ہے۔ جن لوگوں نے کل بچوں پر پتھر برسائے وہ کس دھرم کے لوگ تھے؟ میں پوری رات سو نہیں پایا۔ میں رام کا بھکت ہوں، اگر بھگوان رام ہوتے تو ایسے لوگوں کو سزا دیتے۔ مجھے لگتا ہے کہ جو سزا راویں کو دی تھی، اس سے بھی کڑی سزا دیتے جنہوں نے بچوں پر پتھر برسائے۔

آج ملک کو چند لوگ توڑنے کی کوشش کر رہے ہیں، نسل اور مذہب کے نام پر۔ یہ ٹھیک نہیں ہے۔ آج یوم جمہوریہ کے موقع پر یہ بات میں بہت درد دل سے اٹھا رہا ہوں۔ میں بھارت ماتا سے پیار کرتا ہوں۔ اپنے بھارت کیلئے تن۔ من۔ دھن سب کچھ دینے کو تیار ہوں۔

اس اسٹیج کے ذریعے سے میں ملک کے حکمرانوں سے اپیل کرتا ہوں کہ ہم بھارت کے لوگ خوشی و آرام چاہتے ہیں، ہم بھارت کے لوگ پیار اور محبت چاہتے ہیں۔ ہم بھارت کے لوگ ٹکراؤ نہیں چاہتے۔ ہم بھارت کے لوگ خوشگوار سے اپنے خاندان کو پالنا چاہتے ہیں۔ ہم اپنے بچوں سے پیار کرتے ہیں۔ ہمیں بخش دیجیئے۔ ہم بھارت کے لوگ اپنے ملک سے پیار کرتے ہیں۔ ہم بھارت کے لوگ اپنے ملک کو ٹوٹے نہیں دیکھ سکتے۔

بھارت ماتا کی جے

■ انقلاب زندہ آباد

قانون کو ٹھیک کیا جائے تاکہ تاجروں کا ہراساں کرنا بند ہو۔ میں مرکز سے ہاتھ جوڑ کر اپیل کرتا ہوں۔ اگر ماسٹر پلان میں بدلاؤ کرنا ہے یا آرڈی نینس لانا ہو، جو کرنا ہو کریں۔ جو تعاون چاہیے وہ ریاستی حکومت دے گی۔

دوستو! کل گڑ گاؤں میں بچوں کے اوپر ایک بس میں کچھ لوگوں نے پتھر برسائے۔ سوشل میڈیا میں ویڈیو دیکھے کہ ٹیچر بچوں کو کیسے سیٹ کے نیچے گھسار رہے تھے۔ میں پوری رات سو نہیں پایا۔ یوم جمہوریہ کے پہلے ملک کی راجدھانی سے کچھ کلومیٹر دور اگر بچوں کو اس طرح پتھروں سے مارا جاتا ہے تو یہ ڈوب مرنے کی بات ہے۔ کسی کو کوئی بھی پریشانی ہو، ہمارے بچوں پر ہاتھ نہیں اٹھا سکتے۔

ہمارا بھارت دلش بھگوان رام کی دھرتی ہے، بھگوان کرشن کی دھرتی ہے، یہ گوتم بودھ کی دھرتی ہے، بھگوان مہاویر کی دھرتی ہے، گرو نانک کی مہاراج کی دھرتی ہے، یہ کبیر اور میرا کی دھرتی ہے، یہ محمد صاحب اور جیسس کراسٹ کے پیروکار کی دھرتی ہے، یہ گاندھی کی دھرتی ہے... میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا بھگوان رام نے کبھی کہا تھا کہ معصوم بچوں پر پتھر چلانے چاہیے؟ کیا بھگوان کرشن نے، گوتم بودھ نے، مہاویر نے ایسی تعلیم دی تھی؟ کیا گرو نانک نے، محمد صاحب نے، کبیر نے، میرا نے، گاندھی جی نے کبھی کہا تھا کہ معصوم



دہلی میں پانی کو لیکر کئی جگہ بحران ہے۔ ہماری سرکار بننے کے پہلے دہلی کی تمام کالونیاں ایسی تھیں، جہاں پانی نہیں آتا تھا۔ ٹینکر مافیا تھا، پانی خریدنا پڑتا تھا۔ ہم نے تین سال میں ٹینکر مافیا ختم کر دیا۔ تین سو کالونیوں میں پائپ لائن پہنچایا ہے۔ ابھی بہت کام باقی ہے۔ دہلی میں آبادی بڑھ رہی ہے۔ پانی محدود ہے، آنے والے دہائی میں یہ امید نہیں کر سکتے کہ ہریانہ یا اتر پردیش سے پانی منگاتے رہیں۔ ہمیں دہلی میں ایک - ایک بوند پانی کو بچانا پڑے گا۔ ہم نے یو جینا بنائی ہے۔ دہلی میں جگہ جگہ چھوٹے چھوٹے سیوریج پلانٹ لگائے جا رہے ہیں، جہاں پانی صاف کر کے آس پاس کی واٹر باڈیز میں ڈالا جائے گا۔ واٹر لیول بڑھے گا۔ سیلف سسٹیننگ یو جینا تیار کی جا رہی ہے۔ کچھ پائلٹ پروجیکٹ ہوئے ہیں، جو بہت کارگر ہوئے ہیں۔ جلد ہی میں پورا خاکہ پیش کرونگا۔

آج دہلی میں تاجروں پر بہت بڑا بحران ہے۔ تاجر یہاں چوری ڈاکہ نہیں ڈالتے۔ 24 گھنٹے محنت کرتے ہیں، سرکار کو ٹیکس دیتے ہیں۔ میں نے سوشل میڈیا پر تصویریں اور ویڈیو دیکھے کہ تاجر سڑک پر لیٹ کر پولیس کے پیر پکڑ کر گڑ گڑا رہے ہیں۔ ہم تاجروں کو ایسے نہیں چھوڑ سکتے۔ اگر دہلی میں تجارت ٹھپ ہوگئی تو لوگوں کو روزگار کون دیگا۔ ان کی سیلنگ بند ہونی چاہیے۔ غلط قانون کی وجہ سے تاجروں کو پریشانی ہو رہی ہے۔

کسی بچے سے پوچھو تو کہتے ہیں کہ ڈاکٹر، وکیل اور انجینئر بننا ہے۔ اچھا ہے، لیکن سب سے پہلے اچھا انسان بننا چاہیے۔ آج پورے ملک میں جس طرح سے عورتوں کی خلاف جرم ہو رہے ہیں... اخبار بھرے پڑے ہیں عصمت دری کی خبروں سے... عورتوں کی عصمت دری کر کے جلا دیئے گئے، مار دیئے گئے۔ ایسا واقعات بہت تکلیف دیتی ہیں۔ اس کے لئے سب کو ملکر کام کرنا پڑے گا۔ اس کیلئے اپنے لڑکوں کو ٹریننگ دینا پڑے گا۔ گھر کے اندر جو بھی آدمی غلط کام کرتے ہیں، وہ کسی خاندان کے ہوتے ہیں، کسی ماں کے بیٹے، بہن کے بھائی، عورت کے شوہر ہوتے ہیں۔ اپنے اپنے گھر کے آدمی کو بتاؤ کہ عورتوں کی عزت کرنا سیکھو ورنہ جو تم باہر کرتے ہو، وہی کل تمہارے گھر کی عورتوں کے ساتھ ہوگا۔

پچھلے کچھ وقت میں دہلی خواتین کمیشن کی صدر سواتی مالیوال نے دہلی پولیس کے ساتھ خواتین کو چھڑایا۔ میں انہیں سلام کرتا ہوں۔ مبارکباد دیتا ہوں۔ دہلی مہیلا آویگ اور دہلی پولیس نے ملکر شاندار کام کیا، وہ اسلئے کہ کسی نے مداخلت نہیں کیا، نہ دہلی سرکار نے، نہ مرکز نے، نہ پارٹی نے۔ اس سے پتہ چلتا ہے کہ افسر بہت اچھے ہیں، انسٹی ٹیوشن بھی اچھے ہیں۔ سیاسی مداخلت انسٹی ٹیوشن کو برباد کر دیتا ہے۔ آج میں دہلی کے لوگوں سے دہلی کے پانی کے منیجمنٹ کے بارے میں بھی بات کرنا چاہتا ہوں۔





کی عادت ڈالی جاتی ہے۔ بچے مشین بن جاتے ہیں۔ اس نظام کو بدلنے کی ضرورت ہے۔

ہمیں لگتا ہے کہ بچوں کو جو پڑھائی کرائی جا رہی ہے، اسے پچاس فیصدی کم کرنا چاہیئے۔ کتابیں آدھی سے کم کرنی ہے۔ ہمیں بچوں کو ایسا بنانا ہے کہ جب وہ پاس ہو کر نکلیں تو اس کے اندر حُب الوطنی کا جذبہ گھٹ کر گھٹ کر بھرا رہنا چاہیئے۔ اچھا شخص ہونا چاہیئے۔ سماج کیلئے وقف ہونا چاہیئے اور اتنا قابل ہونا چاہیئے کہ وہ ملازمت کر سکے۔

آزاد ہندوستان میں ایسا کبھی دیکھنے کو نہیں ملا۔ میں یوم جمہوریہ پر منیش سوسودیا جی سے ایک اور اپیل کرنا چاہتا ہوں۔ ایجوکیشن کے تین مقصد ہیں۔ بچہ انسان بن سکے، اچھا شخص بن سکے اور روزی روٹی کمانے کے لائق بن سکے۔ لیکن مجھے دکھ ہے کہ ہماری پوری تعلیمی نظام لورڈ میکالے کے بنائے تعلیمی نظام پر انحصار ہے۔ تمام ممالک نے اپنی تعلیمی نظام بدلی ہے، ہمیں بھی سوچنا ہوگا کہ کیا ہماری تعلیم بچوں کو اچھا شخص، انسان اور روزی روٹی کمانے لائق بناتی ہے؟... نہیں بناتی۔ بچوں کو صرف رٹنے





کو قبول کرتے ہوئے نافذ کرتے ہیں اور خود کو یہ آئین دیتے ہیں۔" مجھے بہت خوشی ہے کہ آج دہلی کے سارے سرکاری اور پرائیویٹ اسکولوں میں 40 لاکھ بچے اس تمہید کی حلف لے رہے ہیں۔ یہی نہیں ایک گھنٹے اس خوبصورت تمہید پر گفتگو کریں گے۔ میں منیش سوسودیا جی کو تہ دل سے مبارکباد دے رہا ہوں کہ انہوں نے خوبصورت بات سوچی۔ ہم لوگوں نے دیکھا ہے کہ دہلی میں پچھلے تین سالوں میں تعلیم میں کیسا انقلاب آ رہا ہے تعلیم میں زبردست بدلاؤ ہو رہا ہے۔ لوگ بچوں کو پرائیویٹ سے نکال کر سرکاری اسکولوں میں داخلہ کر رہے ہیں۔ ان کے نتیجے پرائیویٹ اسکولوں سے بہتر ہو رہے ہیں۔

"ہم ہندوستان کے عوام، ہندوستان کو ایک مکمل خود مختار، سماجی غیر مذہبی، عوامی جمہوریہ بنانے کیلئے اور اس کے تمام شہریوں کو سماجی، معاشی اور سیاسی انصاف، فکر، اظہار خیال، یقین، مذہب اور عبادت کی آزادی، مقام اور موقع کی برابری حاصل کرنے کیلئے اور ان سب میں آدمی (فرد) کی عزت اور قومی یکجہتی اور اتحاد کو یقینی بنانے والی بھائی چارگی بڑھانے کیلئے پختہ ارادہ کر کے اپنی مجلس آئین ساز میں آج مورخہ 26 نومبر 1949ء کو (اندازہ راہ عنوان قمری مہینے کا روشن حصہ ساتویں تاریخ، پر مشتمل دو ہزار چھ وکرمی) ہم یہاں اس آئین





وزیر اعلیٰ ارونڈ کچر یوال کا جشنِ یومِ جمہوریہ پر خطاب ڈاکٹر یا انجینئر بننے سے پہلے اچھا انسان بننا بچوں!

بازار سے ماچس اور کپڑا خریدنے پر ٹیکس دیتا ہے۔ غریب کے ٹیکس کے پیسے سے سرکاریں چلتی ہیں۔ جتنا بھی سرکار کا پیسہ خرچ ہوتا ہے، سارا غریبوں کا ہوتا ہے یہ جتنے افسر، وزیر اعلیٰ، نائب وزیر اعلیٰ وزیر اعظم ہیں، سب کا گھوڑا۔ گاڑی، بنگلہ عوام کے پیسے سے ہے۔ سارے وزیر، ایم ایل اے اور ایم پی عوام کا خادم ہے۔

آج میں اپنے ساتھ آئین کی تمہید لیکر آیا ہوں۔ یہ کیا کہتی ہے، بچوں کو بتانا ضروری ہے۔ یہ کہتی ہے کہ -

ہندوستان کے یومِ جمہوریہ پر سب کو بہت - بہت مبارکباد۔ جیسا کہ ہم جانتے ہیں کہ آج ہی کے دن 26 جنوری 1950 کو ہندوستان کا آئین لاگو ہوا تھا۔ جمہوریہ کا مطلب ہے عوام کی حکومت۔ عوام کے حساب سے سرکار چلے گی۔ عوام ووٹ دیتی ہے، اپنی سرکار چلاتی ہے۔ غریب سے غریب شخص کو ووٹ دینے کا حق ہے۔

ملک کا ہر شہری ٹیکس دیتا ہے۔ غریب سے غریب آدمی بھی، یہاں تک کہ بھکاری بھی ٹیکس دیتا ہے۔



कला, संस्कृति और साहित्य बिना जिंदगी अधूरी है?

“

शिक्षा और कला दो ऐसे स्तंभ हैं जिनकी मजबूती से ही लोकतान्त्रिक समाज मजबूत होता है।

”

कला, संस्कृति और साहित्य की इंसानियत को विभिन्न रंगों से सजाने की क्षमता और समाज को आकार देने में कला की भूमिका का मैं हमेशा कायल रहा हूँ। कला, संस्कृति और साहित्य ने हमेशा निजी जिंदगी की जटिलता से लेकर सामाजिक संघर्षों तक में सार्थकता और संतुलन बनाने में हमेशा हमारी मदद की है। जिंदगी में खुशहाली और खूबसूरती लाने के साथ-साथ कला हमारे अंदर एक आलोचनात्मक सोच को भी विकसित करती है और हमें उस दुनिया से जोड़ने का भी काम करती है जो हमारे आसपास है और अनजानी है। दिल्ली सरकार अलग-अलग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के ज़रिए व्यक्ति और समाज की रचनात्मकता बढ़ाने के लिए लगातार काम कर रही है।

पिछले तीन वर्षों में हमने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। मैं कला को भी शिक्षा की ही तरह सामाजिक उत्थान के एक बड़े और शक्तिशाली माध्यम के रूप में देखता हूँ। मेरा सपना है कि हमारा लोकतंत्र शिक्षा और कला के दो स्तंभों पर खड़ा होकर मजबूत हो। शिक्षा जहाँ हमें ऊपर उठने में मदद करेगी वहीं कला हमें जमीन से जोड़कर रखेगी। यह हमारे समाज की आत्मा को सजीव बनाये रखेगी। इसीलिए, कला, संस्कृति और साहित्य हमारे सरकार की समग्र विकास रणनीति का एक अहम हिस्सा है।

हमारी प्यारी दिल्ली एक समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का शहर है। यहाँ कला, साहित्य और संस्कृति के विविध रूप सहज ही एकसाथ देखने को मिलते हैं।

दिल्ली सरकार ने कला, संस्कृति और साहित्य को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए कई बेहतरीन कार्यक्रम शुरू किए हैं। हमारे कला, संस्कृति विभाग का सांस्कृतिक कैलेंडर हमेशा जीवंत रहता है लेकिन इसके बावजूद दिल्ली के बहुत सारे कला प्रेमी इन कार्यक्रमों के बारे में नहीं जान पाते हैं। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि कला में रुचि रखने वाला कोई भी दिल्ली वासी अपनी पसंद के किसी भी कला कार्यक्रम से वंचित न रहे।

दिल्ली सरकार के कला, संस्कृति, साहित्य संबंधी कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी बढ़ाने के लिए एक नई पहल शुरू करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। दिल्ली के कला प्रेमियों के लिए दिल्ली सरकार के कला, संस्कृति विभाग द्वारा एक "मिस्ड कॉल" सुविधा लॉन्च की जा रही है जिस पर केवल एक मिस्ड कॉल देने भर से आपको लगातार दिल्ली के कला, संस्कृति कार्यक्रमों की जानकारी एसएमएस/व्हाट्स एप द्वारा मिलती रहेगी।

नया साल आपके लिए कला, संस्कृति और साहित्य से भरपूर हो, ऐसी मेरी शुभकामना है।

मनीष सिसोदिया

उप मुख्यमंत्री, दिल्ली

दिल्ली सरकार के द्वारा आयोजित कला, संस्कृति एवं साहित्य संबंधी कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त करने के लिए मिस्ड कॉल करें-

9323-300-300

WhatsApp पर जानकारी प्राप्त करने के लिए उपरोक्त नंबर को अपने फ़ोन में सेव करें और 'HA' मैसेज भेजें

क्या आप तनावग्रस्त हैं ?
मन में परीक्षा का डर है ?
कोई समस्या है ?



ये मत सोचिये कि आप अकेले हैं – हमसे बात कीजिए !!!

मदद आप से एक कॉल दूर है, हम आप के साथ हैं।

 युवा हेल्पलाइन

हमारे निःशुल्क नंबर पर कॉल कीजिये

1800116888

या

10580

हेल्पलाइन 30.3.2018 तक, 24x7 (सभी दिन) खुली रहेंगी

बच्चे अथवा उनके माता-पिता भी कॉल करके सलाह प्राप्त कर सकते हैं।

अथवा व्यक्तिगत रूप से भी निम्न पते पर आकर भी बात कर सकते हैं-

संपर्क करें : ई वी जी सी ब्यूरो , साइंस सेंटर प्लॉट नंबर- 3,
लिंग रोड, झंडेवालान, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

दिल्ली सरकार

आप की सरकार

शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन ब्यूरो

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

दिल्ली सरकार

आप की सरकार

डॉ. जयदेव षड़ंगी, सचिव/निदेशक, सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110 054 द्वारा प्रकाशित
एवं आकांक्षा इम्प्रेशनस, 18/36 स्ट्रीट नं. 5, रेलवे लाइन साइड, आनंद पर्वत इंडस्ट्रियल एरिया, न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली-05 द्वारा मुद्रित